RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 25 नवम्बर 2019/ पोस्टिंग तिथि 29 नवम्बर

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका दिसम्बर 2019

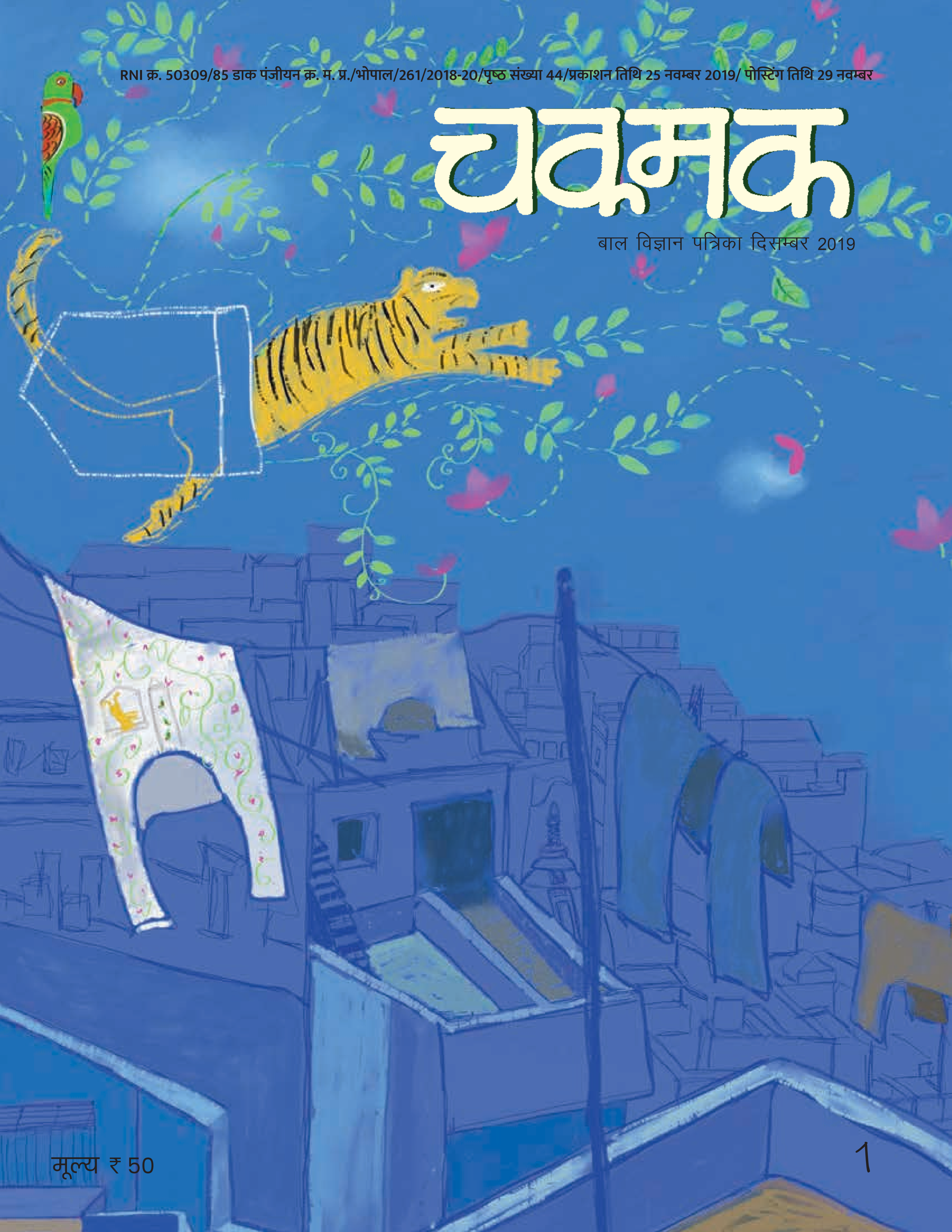

मूल्य ₹ 50

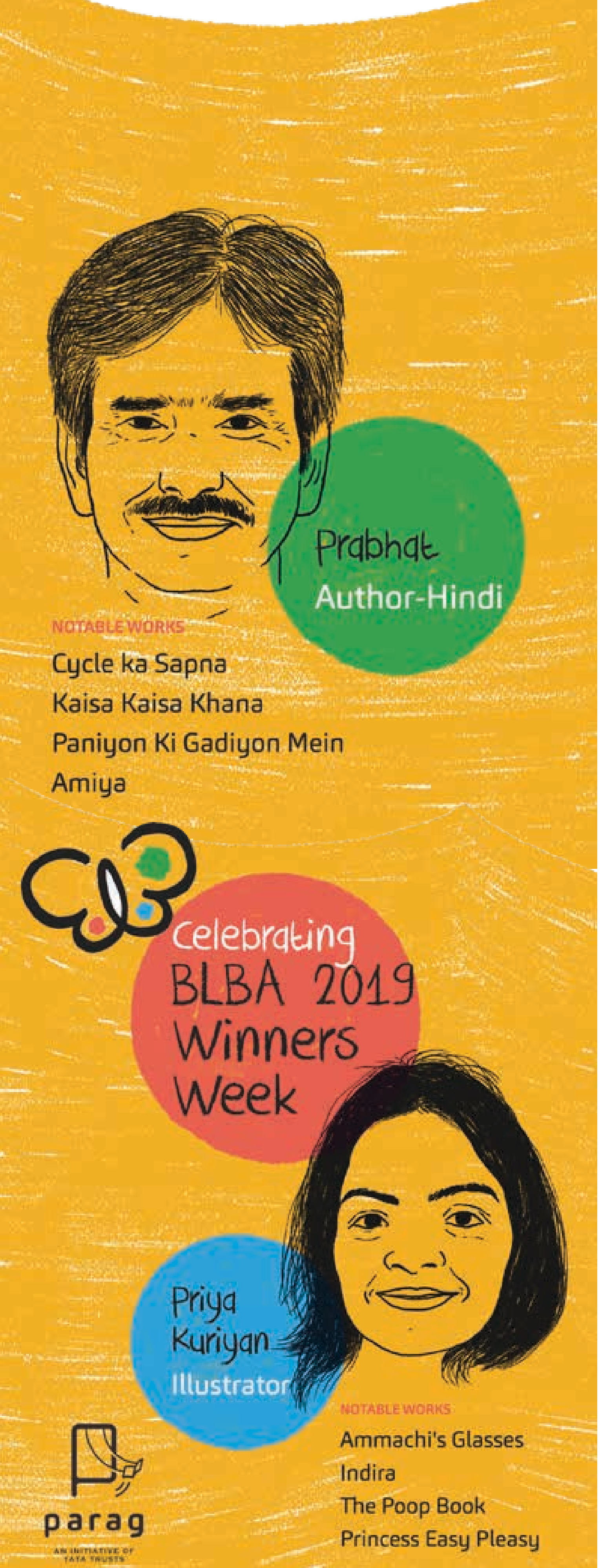

बिग लिटिल बुक अवार्ड

चकमक में तुमने प्रभात की कविताएँ-कहानियाँ तो पढ़ी ही होंगी। प्रभात की पहली किताब 2005 में प्रकाशित हुई थी। तभी से प्रभात चकमक के लिए नियमित रूप से लिखते आ रहे हैं। प्रभात की चकमक में 50 से भी ज़्यादा रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं जिनमें 'चीनीखोर बुढ़िया', 'तितलियों का खेल', 'खेलूँ क्रिकेट' आदि कविताएँ शामिल हैं। 'लाल साइकिल कहाँ खो गई', 'दो भएली', 'रफ्तार मिस्त्री की स्कूटर' आदि इनकी उन कहानियों में से हैं जो चकमक में प्रकाशित हुई हैं।

हाल ही में प्रभात को बिग लिटिल बुक अवार्ड से सम्मानित किया गया है। ये अवार्ड सन 2016 से भारत के उन रचनाकारों को दिया जा रहा है जिन्होंने बाल साहित्य में उत्कृष्ट योगदान दिया है। हर साल किसी एक भाषा के साहित्यकारों को यह अवार्ड उनकी किन्हीं खास किताबों के लिए दिया जाता है। प्रभात को *साइकिल का सपना, कैसा कैसा खाना, पानियों की गाड़ियों में* और *अमिया* के लिए सराहा गया है।

"बच्चों को कब क्या पसन्द आ जाएगा यह उतना ही अनिश्चित है, जितना कि ज़िन्दगी" -प्रभात

हर साल एक चित्रकार को भी बिग लिटिल बुक अवार्ड से सम्मानित किया जाता है। इस साल की विजेता हैं - प्रिया कुरियन। वह महज़ कहानियों का ही नहीं, जीवनियों का भी चित्रांकन करती हैं। अलग-अलग शैलियों व मीडियम का इस्तेमाल करने वाली प्रिया अपने चित्रों से कहानियों को कई गुना ज़्यादा मज़ेदार बना देती हैं। 2003 से किताबों का चित्रांकन करने वाली प्रिया ने लगभग दस सालों से चकमक के लिए भी उम्दा चित्रांकन किया है। प्रिया को यह अवार्ड उनकी किताबें *अम्माचीज़ ग्लासेस, इन्दिरा, द पूप बुक* और *प्रिंसस ईज़ी प्लीज़ी* के लिए मिले हैं। इनमें से *अम्माचीज़ ग्लासेस* निःशब्द किताब है।

इस साल के बिग लिटिल बुक अवार्ड के दोनों विजेताओं ने चकमक के लिए एक साथ काम किया है। अप्रैल 2010 की चकमक में प्रिया ने प्रभात की कहानी 'लम्बी पूँछ वाला चूहा' के चित्र बनाए थे।

बिग लिटिल बुक अवार्ड टाटा ट्रस्ट्स के द पराग इनिशिएटिव द्वारा दिया जाता है।

400-1!

जनवरी का अंक चकमक का 400वां अंक होगा। इस अवसर पर हम एक विशेषांक तैयार कर रहे हैं। तुम भी 400वें अंक के लिए कुछ लिखकर भेजो - आसपास की खबरें, कहानी, कविता, पहेली, किसी दिलचस्प व्यक्ति से तुम्हारी मुलाकात के बारे में, तुम्हारा बनाया हुआ कोई चित्र, खाने की चीज़ या क्राफ्ट...

अंक 399 दिसम्बर 2019

चकमक

इस बार

बिग लिटिल बुक अवार्ड	2
बिजली क्यों भाई गिरियो - युमना फातिमा	4
किट्टू उड़नछू! - हर्षिका उदासी	5
कहाँ गई हमारी पूँछ?- डी. बालसुब्रमण्यन	9
सरहदें - मुदित श्रीवास्तव	11
बार-हैडड गीस - रोहन चक्रवर्ती	13
सूखी लकड़ी में जान - उमेश चौहान	14
भूलभुलैया	16
साइमन कहाँ है, सैंडी? - डॉना मरी सेड्म	17
छाल - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन	22
क्यों-क्यों?	24
कहानी पूरी करो	26
पक्का वादा - द्वारका	28
बस में बैठे बीस - रमेश थानवी	30
तुम भी जानो	31
किताबें कुछ कहती हैं... पुस्तक समीक्षा	32
मेरा पन्ना	34
माथापच्ची	40
केला - सुधा चौहान	41
चित्रपहेली	43
जुनू और उनु - निधि	44

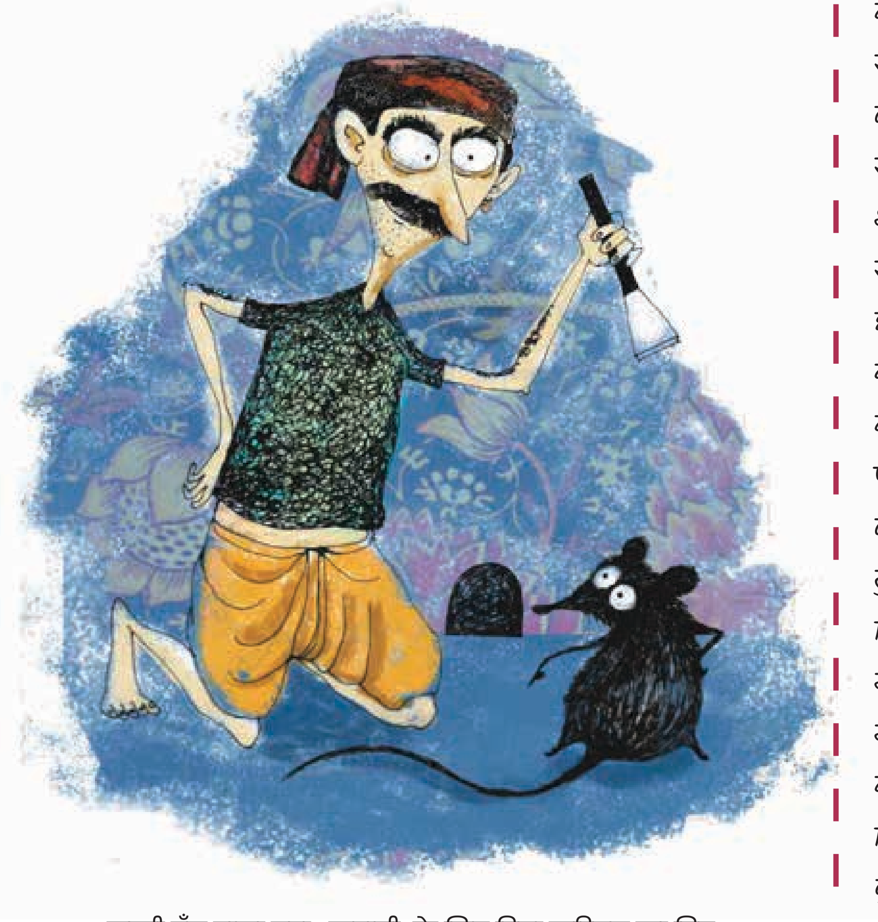

लम्बी पूँछ वाला चूहा, कहानी के लिए प्रिया कुरियन का चित्र

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

आवरण चित्र: तापोशी घोषाल

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026, फोन: +91 755 2977770 से 3 तक
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

बिजली क्यों भाई गिरियो

युमना फातिमा
चित्र: नीलेश गेहलोत

ज़मीन बोले काहे तुम गिरियो?
आकर हमारा सर दर्द करियो
बरसात में तुम यही करियो
आकर हमसे चिपक जइयो।
बिजली बोले शान्त रहियो!
हमारे बिना तुम अधूरे लगियो
हमारे दोस्ती अमर रहे
बिजली जैसे कड़क रहे।

युमना फातिमा, पाँचवीं, दिल्ली पब्लिक स्कूल पटना, बिहार

किट्टू उड़नछू! - 7

डगमगाती शुरुआत

हर्षिका उदासी
अंग्रेज़ी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी
चित्र: लावण्या नायडू

यह हर्षिका उदासी की अंग्रेज़ी किताब *Kittu's Very Mad Day* का हिन्दी अनुवाद है।

अब तक तुमने पढ़ा :

किट्टू अपने चौदह लोगों के परिवार के साथ सैर के लिए पन्ना जाता है। लौटते समय वह एक ढाबे पर छूट जाता है, जहाँ उसकी मुलाकात माधव नाम के आइसक्रीम वाले से होती है। जब किट्टू उसे बताता है कि वह खो गया है तो माधव उसे पुलिस स्टेशन ले जाने लगता है। तब किट्टू माधव को अपने पिता के डॉन होने की ऐसी कहानी बताता है कि डरकर वह उसे अपने घर ले आता है। अपने अजीबोगरीब परिवार से अलग होकर किट्टू को मज़ा आ रहा होता है। लेकिन माधव की बेटी मधेश्वरी यानी 'मैड' को किट्टू का आना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। खजुराहो पहुँचकर परिवार वालों को एहसास होता है कि किट्टू गुम हो गया है। वे उसे ढूँढने वापिस निकलते हैं। माधव भी किट्टू के माता-पिता से सम्पर्क करने की कोशिश करता है, लेकिन कर नहीं पाता है। इधर किट्टू का परिवार उसे ढूँढने की जद्दोजहद में पुलिस स्टेशन पहुँचता है और उधर क़िट्टू स्केटबोर्ड पर अपनी पहली उड़ान से फूला नहीं समा रहा होता है।

अब आगे...

जब किट्टू ने अगली सुबह अपनी आँखें खोलीं तो दो चेहरे उसको ताक रहे थे, और दोनों ही काफी परेशान दिखाई दे रहे थे।

इनमें से एक चेहरा था माधव का। वो अभी भी इसी ऊहापोह में अपना सिर खुजा रहा था कि इस खोई हुई 'सम्पत्ति' को इसके सही अधिकारियों तक कैसे पहुँचाया जाए, खास तौर से ऐसी स्थिति में जबकि फोन उठाने वाली भाभी ने इस बात को ही मानने से इन्कार कर दिया था कि ये उनका बेटा है!

दूसरा चेहरा था मंगलेश्वरी का। शुरुआती 'सदमे' और विरोध के बाद अब वह किट्टू को पसन्द करने लगी थी। लेकिन उसे अपने कई सवालों के जवाब चाहिए थे।

मंगलेश्वरी ने जैसे ही देखा कि किट्टू जाग गया है, वो शुरू हो गई। "बढ़िया, बढ़िया, बढ़िया। अब बताओ क्या तुम सुबह कुछ खाते हो? या फिर दूध पीते हो? क्या तुम्हें नहाने में कुछ मदद चाहिए? या टॉयलेट वगैरह जाने में? और कपड़ों का क्या? क्या मैं तुम्हें मधेश्वरी की शर्ट दे दूँ? पैंट क्या यही वाली पहने रहना चाहोगे? क्या मैं तुम्हारे कपड़े धो दूँ? हालाँकि मुझे कपड़े धोना बहुत बुरा लगता है, लेकिन मैं कर दूँगी। चलो अब जल्दी से उठ जाओ।"

वो बोलते-बोलते लगातार घर के अन्दर-बाहर हो रही थी और उस हिसाब से ऊँचा और धीमा बोलती जा रही थी। हूँ...माँ तो हर जगह एक-सी ही होती हैं, किट्टू ने सोचा।

माधव किट्टू की तरफ देखकर अस्पष्ट ढंग से मुस्कराया और फिर कुछ निश्चय के साथ घर से बाहर निकल गया। किट्टू ने उसे देखकर सोचा कि इसे पक्के में कोई आइडिया आया होगा और पता नहीं इसने उस रॉंग नम्बर के साथ क्या किया।

किट्टू हाथ-मुँह धोने के लिए बाहर आया। मैड तो पहले ही उठकर तैयार हो चुकी थी।

"तुम इतनी जल्दी उठती हो?" सुबह की धूप में जम्हाई और अँगड़ाई लेते हुए किट्टू ने पूछा।

"हाँ, राजाजी। मुझे दिन भर का पानी भरने के लिए अपनी माँ की मदद करनी पड़ती है।" किट्टू की तरफ मुँह बनाते हुए मैड बोली।

किट्टू को अपने परिवार का खयाल आया जिसके सदस्यों की संख्या अब 13 रह गई थी। वो सोच रहा था कि ना जाने वो लोग अब कहाँ होंगे। उसे यकीन था कि उसको खोजने की कोशिश में वो लोग कोई तूफान खड़ा कर रहे होंगे। उसकी घर्र-घर्र-घर्र वाली हँसी फूट पड़ी।

"क्या हुआ?" मैड ने उसकी तरफ इस तरह देखते हुए पूछा मानो वो पगला गया हो।

"मैं बस अपने परिवार के बारे में सोच रहा था।" एक बार फिर अपनी घर्र-घर्र-घर्र वाली हँसी के साथ किट्टू ने जवाब दिया।

"तुम्हें पता है न कि तुम बहुत ही ज़्यादा अजीब हो? अगर मैं खो गई होती – तौबा, तौबा, तौबा – तो अपने परिवार का खयाल आने पर मुझे हँसी नहीं, बल्कि रोना आता।" मैड ने उसकी तरफ घूरकर देखते हुए कहा लेकिन उसकी खर्राटेनुमा हँसी को शान्त होने में समय लगा।

"सुनो मैड, स्केटिंग आंटी ने कल जो कहा था वो मैं करके देखना चाहता हूँ।" थोड़ा झिझकते हुए किट्टू ने कहा। उसे उम्मीद थी कि मैड उसकी इस बात पर हँसेगी नहीं।

"क्या? मतलब खड़े होकर स्केटबोर्डिंग?" मैड ने पूछा। उसके पूछने में मज़ाक वाली हँसी तो बिलकुल नहीं थी, बल्कि वो तो इस बात से बहुत उत्साहित लग रही थी।

"हाँ! तुम्हें लगता है मैं कर पाऊँगा?" "हाँ" सुनने की गहरी उम्मीद के साथ किट्टू ने पूछा।

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं? आखिरकार तुम्हारे पास तीन पैर हैं। और स्केटिंग आंटी ने ऐसा कहा है तो मुझे यकीन है कि तुम कर पाओगे।" मैड बोली। वो इतनी उत्साहित थी कि बात करते-करते उछल-सी रही थी। "अब जल्दी करो, किट्टू! मुझे उम्मीद है कि तुम आज नहाओगे, सूअर कहीं के।"

आधे घण्टे के भीतर दोनों दोस्त जनवार कैसल के लिए निकल पड़े। "क्या किस्मत है मेरी कि मैं यहाँ खोया!" किट्टू ने प्रसन्न होते हुए सोचा।

रंजीत चौधरी इती फुई को पसन्द करने लगा था, यहाँ तक तो ठीक था लेकिन उसने इस बारे में बिलकुल नहीं सोचा था कि इती फुई और उसके परिवार की मदद करने का क्या मतलब है। दुनिया के सबसे अजीबोगरीब परिवार को रात अपने ढाबे में रुकने देना बहुत ही भयानक फैसला था।

ढाबे के कर्मचारी, जो खुद भी ढाबे में सोते थे, रात भर सोने को तरस गए। अगले दिन उन्होंने रंजीत चौधरी से खूब शिकायत की।

"साब, आप इन जोकरों को कहाँ से उठाकर ले आए हो? रात भर ये लोग इस बात को लेकर लड़ते रहे कि किट्टू की देखरेख का ज़िम्मा किसका था। एक बच्चा पूरे समय खाने के लिए कुछ न कुछ माँगता रहा, और एक बच्ची पूरे समय 'वैं...वैं!!!' करके रोती रही। ये बच्चे बड़े भयानक हैं, लेकिन कम से कम उन बड़ों से तो अच्छे हैं जो इनके साथ हैं। एक औरत तो पूरी रात मेरे कान पर ही 'हाय, हाय' करके रोती-चिल्लाती रही।" भैरो ने शिकायत करते हुए कहा। "ये सब नहीं चलेगा साब। मेरी पगार बढ़ाओ।"

"हैलो किट्टू! तैयार हो?" स्केटिंग आंटी किट्टू को देखकर बहुत खुश थीं।

किट्टू ने "हाँ" में सिर हिला दिया। "आज मैं खड़े होकर स्केटबोर्डिंग करना चाहता हूँ।"

"बिलकुल। शुरू हो जाओ!"

शुरू हो जाओ? शुरू हो जाओ से उनका क्या मतलब था? क्या वो उसे सिखाने नहीं वाली थीं कि ये कैसे करना है? क्या उन्हें दिखाई नहीं दे रहा था कि उसका सिर्फ एक पैर था?

"जाओ और अपने लिए एक स्केटबोर्ड उठा लो।" स्केटिंग आंटी ने दीवारों के उन खानों की तरफ इशारा करते हुए कहा जहाँ स्केटबोर्ड बहुत करीने से रखे हुए थे। "और हाँ! यहाँ पहला मौका हमेशा लड़कियों को मिलता है।"

किट्टू उन्हें नज़रें गड़ाकर देखता रहा, और वो अपने केबिन में चली गईं।

इस बीच, मैड तेज़ी-से जाकर किट्टू के लिए सबसे अच्छे स्केटबोर्डों में से एक ले आई थी। "पता है मैं तुम्हारे लिए ये वाला स्केटबोर्ड क्यों लाई? ये देखो!" उसने बड़े उत्साह से कहा।

उस स्केटबोर्ड के निचले हिस्से पर काले और मोटे आकार में K लिखा हुआ था। हो सकता है वो स्केटबोर्ड किसी Katherine (कैथेरीन) या किसी

Konkona (कोंकणा) का रहा हो, आखिरकार वहाँ रखे सारे स्केटबोर्ड किसी न किसी के इस्तेमाल किए गए, पुराने स्केटबोर्ड ही तो थे। पर उस पल तो ऐसा लग रहा था जैसे वो स्केटबोर्ड सिर्फ Kittu (किट्टू) के लिए ही बनाया गया था।

"शुक्रिया, मैड," बत्तीसी दिखाकर मुस्कराते हुए किट्टू ने कहा। फिर उसने पूछा, "अब मैं क्या करूँ?"

"इस पर चढ़ जाओ, और क्या?" मैड बोली।

"हुम्म..., क्या तुम मुझे दिखा सकती हो कैसे?" किट्टू का आत्मविश्वास अचानक थोड़ा डगमगाने लगा था मानो पता नहीं किस काम में उसने अपनी टाँग फँसा दी हो।

"ठीक है। देखो मुझे।" मैड बोली।

उसने अपना स्केटबोर्ड नीचे रखा और अपना बायाँ पैर उसके ऊपर रखा। फिर उसने दाएँ पैर से दो बार स्केटबोर्ड को धक्का दिया, और फिर तुरन्त उस पैर को भी बोर्ड पर रख लिया और सर्रर्रर्रर्र... से चल पड़ी।

"देखा? कितना आसान है," उसने किट्टू को आवाज़ देकर कहा।

"हाँ। हुम्म..., चलो मैं कोशिश करता हूँ।"

मैड वापस आई और उसने किट्टू का स्केटबोर्ड उसके सामने रख दिया। मैड के लिए स्केटबोर्ड चलाना आसान था। वो अपना एक पैर बोर्ड पर रखते हुए गिरती नहीं थी क्योंकि उसका दूसरा पैर ज़मीन पर मौजूद होता था। पर किट्टू क्या करेगा?

अगर वो अपना दायाँ पैर बोर्ड पर रखेगा, तो खुद को सन्तुलित कैसे रख पाएगा? ज़ाहिर है, वो हवा में तो लटका नहीं रह सकता! वो धड़ाम से गिर जाएगा।

उसने एक नज़र मैड की तरफ देखा। मैड ने भी उसकी तरफ देखकर जल्दी से सिर हिलाया जिसका मतलब था, "हाँ, हाँ, आगे बढ़ो।"

पर किट्टू आगे बढ़ ही नहीं पाया, मानो उसके दाएँ पैर ने उसके दिमाग से आदेश लेने बन्द कर दिए हों। उसने खुद को बहुत समझाने की कोशिश की कि ये बिलकुल एक सीढ़ी चढ़ने जैसा ही होगा। लेकिन उसे तो बस अपने नामौजूद बाएँ पैर का खयाल आ रहा था। किट्टू अचानक बड़ी शिद्दत से सोचने लगा कि काश उसका बायाँ पैर भी होता।

जारी...

कहाँ गई हमारी पूँछ?

डॉ. डी बालसुब्रमण्यन

जापान में हाल ही में इन्सानों के लिए एक रोबोटिक पूँछ बनाई गई है। तुम सोच रहे होगे कि आखिर मनुष्यों को पूँछ की क्या ज़रूरत है! दरअसल यह पूँछ बुज़ुर्गों को चलने में, उन्हें गिरने से बचाने, सीढ़ी चढ़ने के दौरान सन्तुलन बनाने आदि में सहायक है। बोझा ढोने वाले मज़दूरों और खड़ी ऊँचाई पर चढ़ने वाले पर्वतारोहियों के लिए भी यह मददगार है। इस पूँछ का नाम आर्क है।

तुम जानते ही होगे कि भूमि व पानी में रहने वाले अधिकांश जीवों की पूँछ होती है, चाहे छोटी हो या बड़ी। पूँछ कई महत्वपूर्ण कार्य करती है, जैसे - मछली पानी में मुड़ने के लिए अपनी पूँछ की मदद लेती है। मगरमच्छ अपनी पूँछ में अतिरिक्त वसा संग्रहित करके रखते हैं, जो आड़े वक्त उन्हें ऊर्जा प्रदान करती है। स्तनधारियों में पूँछ दौड़ते वक्त सिर के वज़न का सन्तुलन बनाने में मददगार होती है। तेज़ दौड़ने वाले जानवरों की पूँछ लम्बी होती है। पेड़ पर चढ़ने वाले बन्दरों की पूँछ भी लम्बी होती है जो उनका सन्तुलन बनाए रखती है।

करोड़ों साल पहले हमारे बन्दर पूर्वजों की भी पूँछ हुआ करती थी। तो, हम में और हमारे करीबी रिश्तेदार चिम्पैंज़ी, गोरिल्ला या बोनोबो में पूँछ बनी क्यों नहीं रही?

तो क्यों खोई?

हमारे पूर्वज चौपाए थे, जंगलों में रहते थे। पेड़ों की नीचे लटकती डालियों तक पहुँचने के लिए वे सीधे खड़े होने लगे होंगे। आज से लगभग 65 लाख साल पहले जब अफ्रीका में सूखा पड़ने लगा तब हमारे पूर्वज पूर्वी इलाकों में फँसे रह गए। यह इलाका सबसे ज़्यादा सूखा था। जंगल के मुकाबले सूखे इलाकों में पेड़ छोटे और अलग किस्म के होते हैं। इस तरह हमारे पूर्वज अफ्रीका के सूखे और झाड़-झंखाड़ भरे इलाकों में भोजन प्राप्त करने के लिए दो पैरों पर खड़े होने लगे।

जैसे ही हमने चार पैरों की जगह दो पैरों पर चलना शुरू किया, पूँछ से सहूलियत मिलने की बजाय असुविधा होने लगी। हम दोपाए मनुष्य सीधे चलते हैं और सन्तुलन बनाने के लिए हमें पूँछ जैसे किसी अतिरिक्त अंग की ज़रूरत नहीं होती। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि पूँछ का जब कोई उपयोग ना हो तो वह महज़ ऐसा अंग होती है जिसे बढ़ने के लिए ऊर्जा चाहिए। और वह शिकारियों के झपटने के लिए एक और चीज़ बनकर रह जाती है।

प्राकृतिक चयन के होते हमारे उन पूर्वजों को वरीयता मिली, जिनकी पूँछ छोटी थी। और इस तरह अगले कुछ लाख सालों में धीरे-धीरे हमारे पूर्वजों की पूँछ खतम हो गई।

पूरी विलुप्त नहीं हुई

लेकिन यह मत सोचना कि तुम पूँछ से बच गए। वास्तव में, गर्भ के अन्दर एकदम शुरुआती चार हफ्तों के जीवन के दौरान हमारी पूँछ होती है। बाद में सातवें हफ्ते तक यह खतम (अवशोषित) हो जाती है। हमारी रीढ़ की हड्डी के आधार में सिर्फ कॉक्सीक्स (पुच्छास्थि) बचती है, जो मांसपेशी के जुड़ाव-स्थल का कार्य करती है।

अब सवाल यह है कि यदि भ्रूण में सात हफ्तों बाद भी पूँछ का अवशोषण ना हो और शिशुओं में पूँछ बनने लगे तो क्या होगा? सौभाग्यवश यह स्थिति दुर्लभ है, और अब तक दुनिया भर में इस तरह के सिर्फ 40 मामले रिपोर्ट हुए हैं। इन सभी नवजात शिशुओं में पूँछ को सफलतापूर्वक हटा दिया गया और सभी स्वस्थ और सामान्य हैं। और अब पूँछ की ज़रूरत तो नहीं है हमें लेकिन जब हमें किन्हीं कारणो से चलते, दौड़ते या चढ़ते समय सन्तुलन बनाए रखने की ज़रूरत होगी तो आर्क हमारी मदद कर सकता है।

स्रोत फीचर्स से साभार

सुडोकू-26

9	7	2				4	3	
	4		3	9			7	1
		3	8		7	2		9
		9	6	1		3	8	
		5						2
			2	8	3	7		5
	1	4	7	3	8	9	2	6
2			9			1		3
		6	5				4	7

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

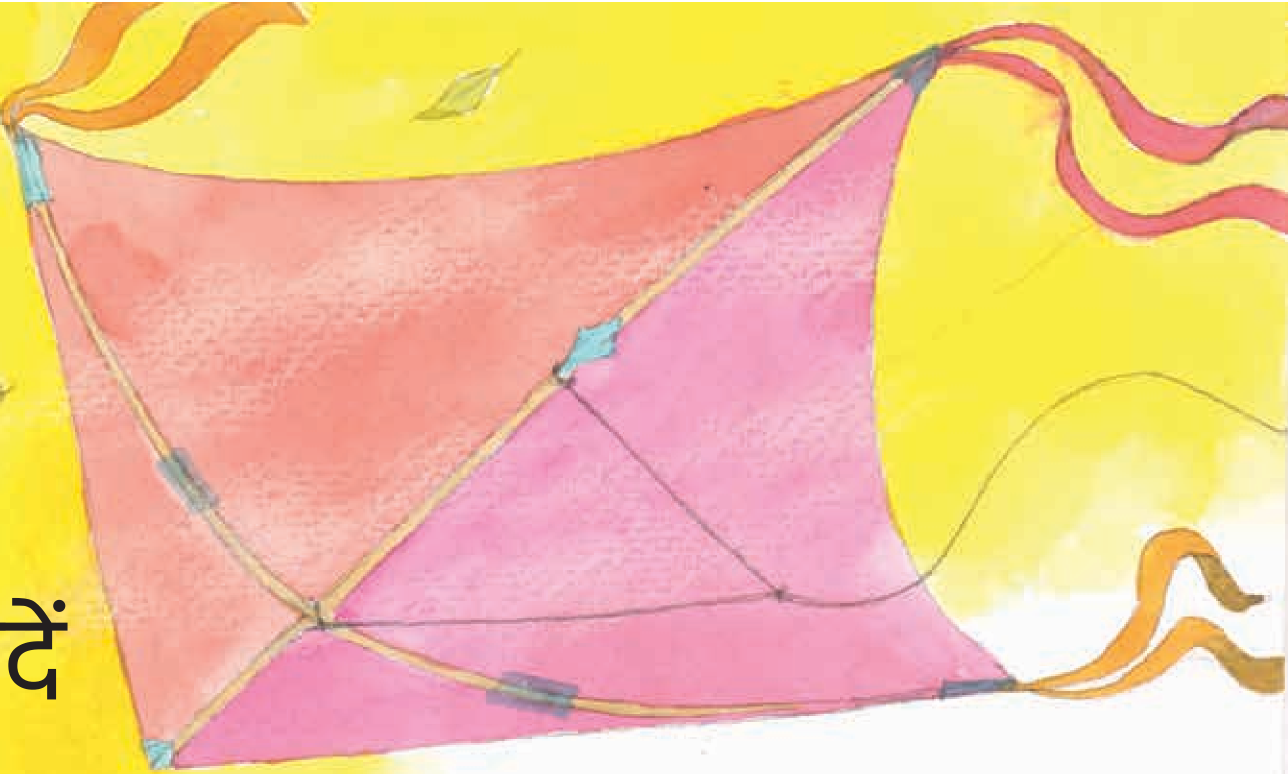

सरहदें

मुदित श्रीवास्तव
चित्र: हबीब अली

उसे उड़ते हुए पंछी बड़े अच्छे लगते थे, वो उन्हें तब तक देखा करता जब तक वे गायब न हो जाएँ। वो अपना सारा दिन खेत पर बिताता और शाम को खटिया में पड़े-पड़े बस आकाश में उड़ते-फिरते पंछियों की गिनती करता रहता।

पहले पंछी पूरा दिखाई देता, फिर वह एक पतंग में बदल जाता। फिर थोड़ी देर बाद केवल एक गेंद आकाश में उड़ती चली जाती दिखाई देती। थोड़ी देर बाद गेंद कंचे में बदल जाती और फिर थोड़ी देर में गायब हो जाती। जैसे उसकी पतंग कट चुकी हो, जैसे वो गेंद खो बैठा हो या अपना एक कंचा खेल में हार गया हो। ऐसा ही लगता उसे कि सारे पंछी उसी के तो हैं और फिर वापस आ जाएँगे। जैसे वह पतंग लूट लाता है, उसके हारे हुए कंचे अगले खेल में वापस मिल जाते हैं और खोई हुई गेंद 2-4 दिनों में हल्की-फुल्की खोजबीन से मिल जाती है।

उसका खेत जहाँ पर खतम होता था, कहते हैं कि वहीं से देश की सरहद शुरू होती थी या शायद खतम होती थी। सरहद आखिर थी किसकी, उसके देश की या दूसरे देश की, दोनों की या किसी की भी नहीं, यह सवाल हमेशा उसके मन में रहता। उसे चेताया गया था कि सरहद के उस पार जाने की सोचना भी मत। उस पार की चीज़ें हमारी नहीं हैं

और न ही इस पार की चीज़ों पर उनका कोई हक है। लेकिन सूरज तो सुबह सरहद के इस पार होता और शाम को उस पार। कितनी सारी चिड़ियाँ पलक झपकते ही उसके खेत से उस पार के खेत को फुर्र कर जातीं, क्या पता? उसके खेत को दिया हुआ पानी भी सरहद के उस पार की फसलों की थोड़ी बहुत प्यास तो बुझा ही देता होगा। इन्हीं सब बातों को सोचते-सोचते उसका ध्यान ऊपर की ओर गया। आसमान डूबते हुए सूरज की रंगत लिए हुए था। सूरज सरहद पार कर जा रहा था। तभी उसी तरफ एक पंछी उसे दिखाई दिया। उसकी उड़ान लड़खड़ा रही थी, वो डगमगा रहा था। लगता था इतनी ऊपर जाने में वह थक गया था और वापस आने के लिए आलस कर रहा था। पर वह जा नहीं रहा था, आ रहा था शायद। हाँ, आ ही रहा था। पहले कंचा और फिर गेंद और फिर थोड़ी देर बाद पतंग जैसे दिखने लगा, अरे! यह पतंग ही है !

बस इतना समझ आते ही वह उस ओर दौड़ा। मांझा दिखाई नहीं दे रहा था लेकिन थोड़ी देर बाद दिखाई देने लगा। वह जैसे-तैसे पतंग लूट लाया और बहुत खुश हुआ। उसके पास घिर्री तो थी, बस पतंग लूटने का ही तो इन्तज़ार था। उसने झटपट पतंग के मांझे की, अपनी घिर्री के मांझे से गांठ लगा दी और उड़ाना शुरू कर दिया। कुछ देर में पतंग यूँ लगने लगी जैसे एक पंछी शान से बेखौफ होकर उड़ रहा है।

वो यह बात किसी से कहना चाहता था कि वो किसी भी पंछी को यूँ डगमगाने नहीं देगा, चाहे वो कहीं से भी आया हो।

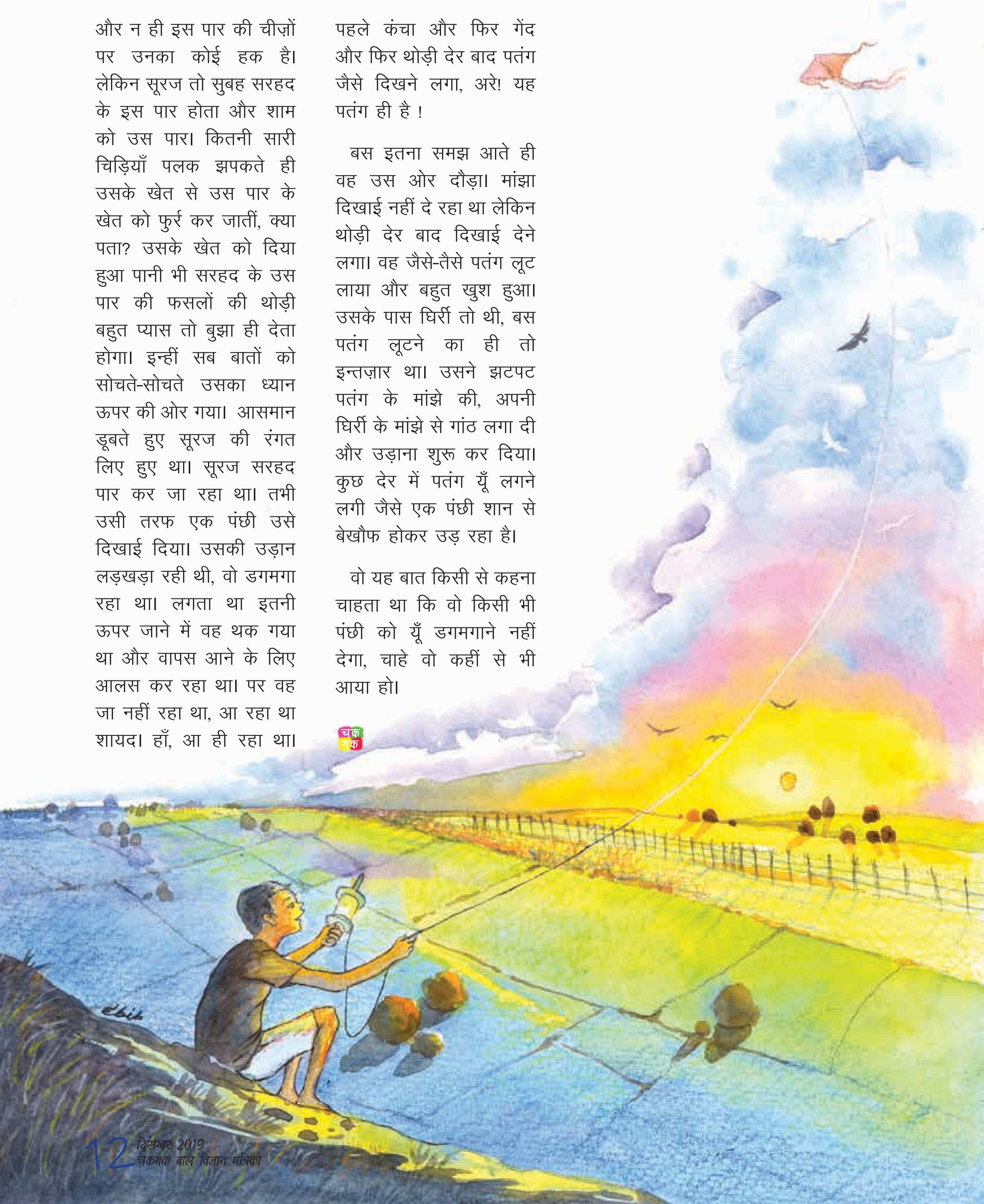

बार-हैडड गीस

रोहन चक्रवर्ती

मध्य एशिया के पहाड़ी तालाबों में हज़ारों की कालोनी में ये पक्षी रहते हैं। बार-हैडड गीस (यानी कि वो गीस जिनके सिर पर पट्टे हों) 2000-4000 किलोमीटर की दूरी का प्रवास कर हर साल अक्टूबर में सर्दियाँ बिताने भारत आते हैं। ये असम से तमिलनाडु में फैल जाते हैं। इन इलाकों की झीलें, खेतों और तालाबों में अपना समय बिताकर अण्डे देने वे मार्च में वापस अपने घर चले जाते हैं।

सूखी लकड़ी में जान

उमेश चौहान

मेरे आँगन में चाँदनी के फूलों का एक बड़ा पेड़ था। जून 2016 में अचानक वह पेड़ सूख गया। शायद भूमिगत जल स्तर काफी नीचे चला गया था। माँ के कहने पर मैंने पेड़ को काट दिया। और तने व डालियों के छोटे-छोटे टुकड़े घर की छत पर सूखने के लिए डाल दिए। सर्दियों में मेरी बूढ़ी माँ हाथ सेंकने और पानी गर्म करने के लिए उनका उपयोग करती थीं।

फरवरी 2017 में मैंने पेड़ के मोटे तने व पुराने बाँस के टुकड़ों के आसपास काले भौंरों के एक जोड़े को अठखेलियाँ करते हुए देखा। उनके बदन पर पीले-सफेद फूलों के परागकण लिपटे रहते थे। एक दिन मैंने देखा कि दोनों लकड़ी के मोटे तने में सुराख बनाकर लकड़ी का बुरादा बाहर फेंकने में मशगूल हैं। कुछ ही दिनों में उन्होंने उसमें 2 सुरंगें बना लीं। सुरंगों के अन्दर जो हो रहा था, वह मेरी कल्पना से परे था।

करीब 15 दिनों बाद मैंने जलाने की लकड़ी के लिए मोटे तने को कुल्हाड़ी से बीच से फाड़ दिया। तने के फटते ही मैंने अन्दर का जो नज़ारा देखा, उससे मेरी आँखें फटी की फटी रह गईं। दोनों सुरंगों में लगभग 2 सेन्टीमीटर व्यास (डायमीटर) के तथा 4 सेन्टीमीटर लम्बाई के कई कक्ष बने थे। हरेक कक्ष

में एक सफेद लार्वा और उस लार्वा के भोजन के लिए लुगदी जैसा लसलसा गोला था। लार्वा छोटे से बड़ी उम्र के क्रम में थे। बड़े लार्वा के पास लुगदी कम बची थी, सम्भवतः उसने खाकर खतम कर दी थी। मैंने लकड़ी से नीचे गिर चुके लार्वा व उनके भोजन को उठाकर उनके कक्ष में रख दिया। लार्वा तुरन्त लुगदी कुतरने लगे। मुझे लुगदी फूलों के रस, पंखुड़ी आदि से बनी लग रही थी। मैंने खाली हुए कक्ष की दीवार को तोड़कर देखा। यह दीवार लकड़ी के बुरादे से बनी थी। भौंरें शायद लकड़ी में अपनी लार मिलाकर उसका बुरादा बनाते हैं।

सबसे बड़े लार्वा के बाद एक कक्ष ऊपर से झिल्ली से बन्द था जिसमें भौंरे की शंखी वाली अवस्था नज़र आ रही थी। शंखी के आगे के कुछ कक्षों की दीवारें टूटी थीं, सम्भवतः इनमें से नवजात भौंरें दूसरे द्वार से निकल चुके थे। मैंने लकड़ी के दोनों टुकड़ों को एक-दूसरे पर रखा और तार से बाँध दिया। यह सोचकर कि इनका जीवन चक्र पूरा हो जावेगा।

जैसे ही मैंने लकड़ी को पलटा, सुरंग के दूसरे द्वार से एक नवजात भौंरा गुंजन करता हुआ बाहर निकला। वह एकदम काला, चमकदार था। तने पर चलते हुए वह ज़मीन पर लुढ़क गया। नवजात ने अपने काले पंख दो-तीन बार खोले। फिर इनके नीचे से 2 और झिल्लीनुमा पंख खोले और उन्हें तेज़ी-से फड़फड़ाया। तब मुझे समझ में आया कि मूल पंख तो ये ही हैं, वे मोटे-काले पंख तो रक्षाकवच हैं। अब भौंरा उड़ने की तैयारी कर चुका था। उसने आगे चलकर गाढ़े पीले रंग का मल उत्सर्जन किया। फिर पूरी ताकत लगाकर पंखों को फड़फड़ाया। अब मुझे बड़े भौंरे जैसी गुंजन सुनाई देने लगी थी। भौंरे ने पहली उड़ान भरी और पलभर में मेरी आँखों से ओझल हो गया।

कई दिनों बाद जब मैंने उन लकड़ी के टुकड़ों को खोलकर देखा तो सभी कक्षों की दीवारें टूट चुकी थीं और उनमें एक भी लार्वा न था। मेरे सिर पर भौंरों का जोड़ा मँडराने लगा था, शायद वे उस लकड़ी में ही रहने लगे थे।

चित्र: अनिकेत, अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

एक सच्ची कहानी

साइमन कहाँ है, सैंडी?

बैंड-तुर्क* नाम का द्वीप, नीले समुद्र से घिरा था। वहाँ साइमन नामक एक बूढ़ा आदमी अपने छोटे गधे सैंडी के साथ रहता था।

साइमन लाल टिन की छत वाले एक छोटे पत्थर के घर में रहता था। सैंडी आरामदायक शेड में सोता था जिसे साइमन ने खासतौर पर उसके लिए ही बनाया था। साइमन के घर में ब्लैकी बिल्ली, बुपर मुर्गा और कुछ बातूनी मुर्गियाँ भी रहती थीं।

साइमन के घर से एक ढलान वाला रास्ता नीचे कॉर्नबर्न टाउन शहर में जाता था।

हर सुबह जब सूरज समुद्र के ऊपर निकलता था, तब साइमन सैंडी को खाली बालटियों से भरी गाड़ी के साथ कुएँ तक लाता था। साइमन हरेक बालटी को ताज़े, ठण्डे पानी से भरता था। जब तक सभी बालटियाँ भर नहीं जातीं, तब तक सैंडी खड़ा इन्तज़ार करता रहता था। बालटियों को भरने में साइमन को कितना समय लगेगा इसका सैंडी को अच्छा अन्दाज़ा था। फिर ठीक समय पर, सैंडी कॉर्नबर्न टाउन की घुमावदार सड़क पर गाड़ी को खींचने लगता था।

छोटे गधे को अपनी नौकरी से प्यार था। लाल फाटक पर जब साइमन पानी देता और खाली बालटी वापस लेता तब तक सैंडी उसका इन्तज़ार करता था। साइमन को सैंडी को यह बताने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी कि उसे नीले या पीले गेट पर कब रुकना है। सैंडी को पूरा रास्ता अच्छी तरह पता था।

डॉना मरी सेड़म
चित्र: सूज़न स्पैलमैन
अंग्रेज़ी से अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

*बैंड-तुर्क द्वीप एक रेगिस्तान जैसा द्वीप है। यहाँ बहुत कम वर्षा होती है। लोगों के पास आज भी घरों में पीने का पानी उपलब्ध नहीं है।

दिन के अन्त में जब साइमन और सैंडी अपने घर लौटते, तो ब्लैकी बिल्ली आहें भरती थी। बुपर मुर्गा अपने पंख फड़फड़ाता था और बातूनी मुर्गियाँ खूब शोर मचाती थीं। तब साइमन, सैंडी को बालटी में ताज़ा पानी, स्वादिष्ट घास और कुछ गाजर खाने को देता था। सैंडी को गाजर बेहद पसन्द थीं!

फिर एक सुबह जब सूरज समुद्र के ऊपर आया, तब साइमन, सैंडी को गाड़ी से बाँधने के लिए अपने घर से बाहर नहीं निकला। तब सैंडी अपने शेड से बाहर निकला और साइमन के घर के सामने आगे-पीछे चहलकदमी करने लगा। वो साइमन को बाहर बुलाने के लिए रम्भाने लगा।

बुपर ने बाँग दी और मुर्गियाँ भी चिल्लाईं। लेकिन न साइमन और न ही ब्लैकी बिल्ली घर से बाहर आई।

साइमन कहाँ था? काम पर जाने का समय हो गया था! सैंडी, साइमन और गाड़ी के बिना कुएँ पर गया। उसने वहाँ उतने समय इन्तज़ार किया, जितना समय साइमन पानी भरने के लिए लेता। फिर उसने गेट को खोला और घुमावदार रास्ते से शहर की ओर अकेला चला। सैंडी, लाल फाटक पर पहुँचा और रुका। उसने वहाँ सिर्फ उतने समय ही इन्तज़ार किया, जितना समय साइमन को पानी देने और खाली बालटी लेने में लगता। फिर वो नीले गेट की ओर चला और उसने वहाँ भी इन्तज़ार किया, और फिर वो पीले गेट पर गया।

बच्चे अपने-अपने घरों के सामने खेल रहे थे, जब उन्होंने देखा कि सैंडी पीले रंग के गेट के सामने अकेले खड़ा था। तब उन्होंने पूछा, “सैंडी, साइमन कहाँ है?” सैंडी ने अपना सिर हिलाया और आगे चल पड़ा।

बच्चों ने सैंडी का पीछा किया। जहाँ-जहाँ सैंडी रुका, उस हर गेट पर बच्चे भी रुके। उन्होंने अन्य बच्चों को बाहर बुलाया और उन्हें भी सैंडी के पीछे-पीछे चलने को कहा।

जब वे शहर के केन्द्र में पहुँचे तो वहाँ पर बेकर ने सैंडी और बच्चों की परेड देखी। “सैंडी, साइमन कहाँ है?” बेकर ने छोटे गधे से पूछा। सैंडी ने सिर्फ अपना सिर हिलाया और वो आगे चल पड़ा।

जब वे कपड़े की दुकान के सामने से गुज़रे, तो दुकानदार ने सैंडी और बच्चों की परेड देखी। “सैंडी, साइमन कहाँ है?” उसने छोटे गधे से पूछा। सैंडी ने अपना सिर हिलाया और आगे चल पड़ा।

जब सैंडी सबसे आखिरी गेट पर आया तो वहाँ रुक गया। बच्चे भी वहाँ रुक गए। वो गाँव के डॉक्टर का घर था। जब डॉक्टर ने अपनी खिड़की से बाहर देखा तब उन्हें सभी बच्चे दिखाई दिए। उन्होंने देखा कि सैंडी गेट पर इन्तज़ार कर रहा था। तब डॉक्टर ने दवाइयों का अपना काला बैग उठाया और वो बाहर की तरफ भागे। “सैंडी, साइमन कहाँ है?” डॉक्टर ने छोटे गधे से पूछा, सैंडी ने अपना सिर हिलाया और फिर वो साइमन के घर जाने वाली घुमावदार सड़क पर चला पड़ा।

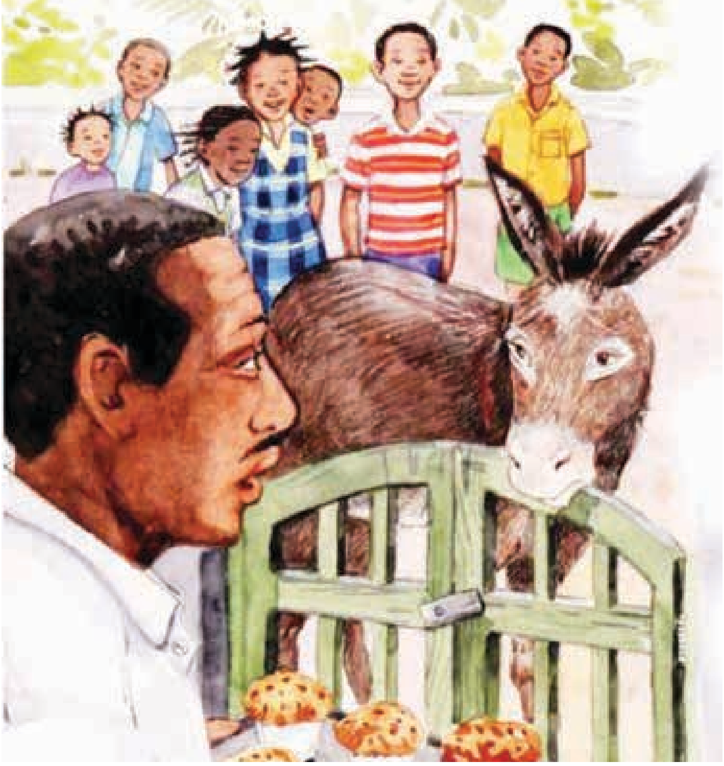

डॉक्टर और बच्चों की परेड भी सैंडी के पीछे-पीछे चली। साइमन को बाहर बुलाने के लिए सैंडी ज़ोर-से रंभाया। डॉक्टर ने दरवाज़ा खटखटाया। अन्दर से एक कमज़ोर आवाज़ ने कहा, “अन्दर आओ।” जब डॉक्टर ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि साइमन फर्श पर बैठा था और उसका एक पैर तकियों के ढेर पर टिका था।

“साइमन, क्या हुआ?” डॉक्टर ने पूछा। “मैं रात में पानी पीने के लिए उठा और फिर ब्लैकी बिल्ली के ऊपर फिसल गया। इससे मेरे पैर में चोट लग गई”, साइमन ने कहा। “ब्लैकी को भी चोट लगी है।” डॉक्टर ने अपना काला बैग खोला और उसमें से एक लम्बी और एक छोटी पट्टी निकाली। लम्बी पट्टी साइमन के पैर पर बाँधी और छोटी पट्टी को ब्लैकी के पंजे के चारों ओर लपेटा। “अब, पैर ठीक होने तक तुम्हें पानी की डिलीवरी का काम बन्द करना होगा!” डॉक्टर ने चेतावनी दी। “लेकिन फिर कॉकबर्न टाउन में लोगों को पीने का पानी कौन पहुँचाएगा?” साइमन ने पूछा।

“सैंडी, कॉकबर्न टाउन में सभी लोगों को पीने का पानी पहुँचाएगा,” सभी बच्चे, खिड़की में से एक साथ चिल्लाए। “लेकिन सैंडी को गाड़ी से कौन बाँधेगा और कुएँ से कौन पानी निकालेगा?” साइमन ने पूछा। “हम सैंडी को गाड़ी से बाँधेगे और कुएँ से बालटियों में पानी भरेंगे,” बच्चों ने खिड़की में से कहा। “लेकिन सैंडी को ताज़ा पानी, स्वादिष्ट घास और गाजर कौन खिलाएगा?” साइमन ने पूछा। “हम सैंडी को ताज़ा पानी, स्वादिष्ट घास और गाजर खिलाएँगे,” बच्चों ने खिड़की में से कहा। “सैंडी, आसानी से हरेक घर में पानी पहुँचा सकता है,” डॉक्टर ने कहा। “सैंडी अच्छी तरह पूरा रास्ता जानता है!”, बच्चों ने खिड़की में से खुशी-खुशी कहा।

पूरे अगले हफ्ते जब सूरज समुद्र के ऊपर उठता तब बच्चे साइमन के घर पहुँच जाते। वे सैंडी को गाड़ी से बाँधकर कुएँ तक ले जाते। फिर वे सभी मिलकर बालटियों में पानी भरते। उसके बाद सैंडी शहर में जाता और लाल गेट, नीले गेट और फिर पीले गेट पर रुकता। कॉकबर्न टाउन के लोग अपने दरवाज़ों पर सैंडी और बच्चों के आने का इन्तज़ार करते। बच्चे प्रत्येक घर में पानी से भरी बालटियाँ देते और खाली बालटियों को सैंडी की गाड़ी में रखते। कुछ दिनों बाद शहर में हर कोई साइमन का पैर ठीक होने का इन्तज़ार करने लगा।

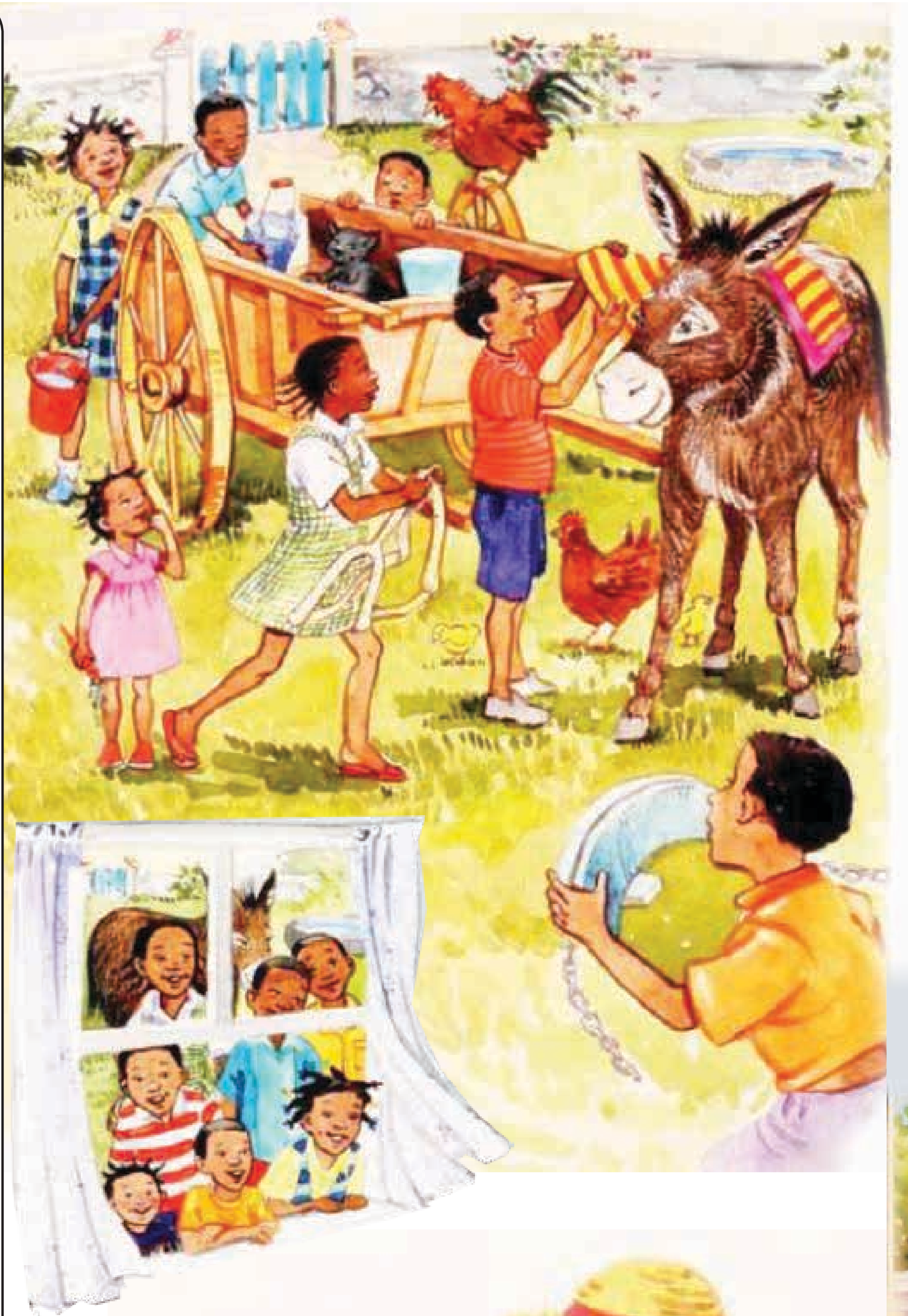

फिर एक दिन साइमन ने बच्चों से कहा, "अब मेरा पैर बिलकुल ठीक हो गया है।" साइमन अपने काम पर वापस जाने के लिए उत्सुक था। अब उसे बच्चों की मदद की ज़रूरत नहीं थी। बच्चे खुश थे कि साइमन का पैर अब बेहतर था। लेकिन फिर भी उन सभी के चेहरे उदास थे। यहाँ तक कि सैंडी का सिर भी लटका हुआ था। साइमन मुस्कराया और उसने कहा, "ठीक है बच्चो, तुम आज मेरे और सैंडी के साथ आ सकते हो!" बच्चे खुश हो गए। लेकिन अगले दिन वे फिर उदास लग रहे थे। इसलिए साइमन ने बच्चों को दुबारा अपने साथ आने दिया। और फिर अगले दिन भी, और उसके अगले, और उसके बाद हर दिन!

इसलिए, यदि तुम कभी कैरिबियन के इस विशेष द्वीप पर जाओ, तो एक बूढ़े आदमी, उसके छोटे गधे और पानी की बालटियों से भरी गाड़ी को ज़रूर तलाशना।

उनके पीछे-पीछे तुम्हें गाते और नाचते बच्चों की परेड भी दिखाई देगी!

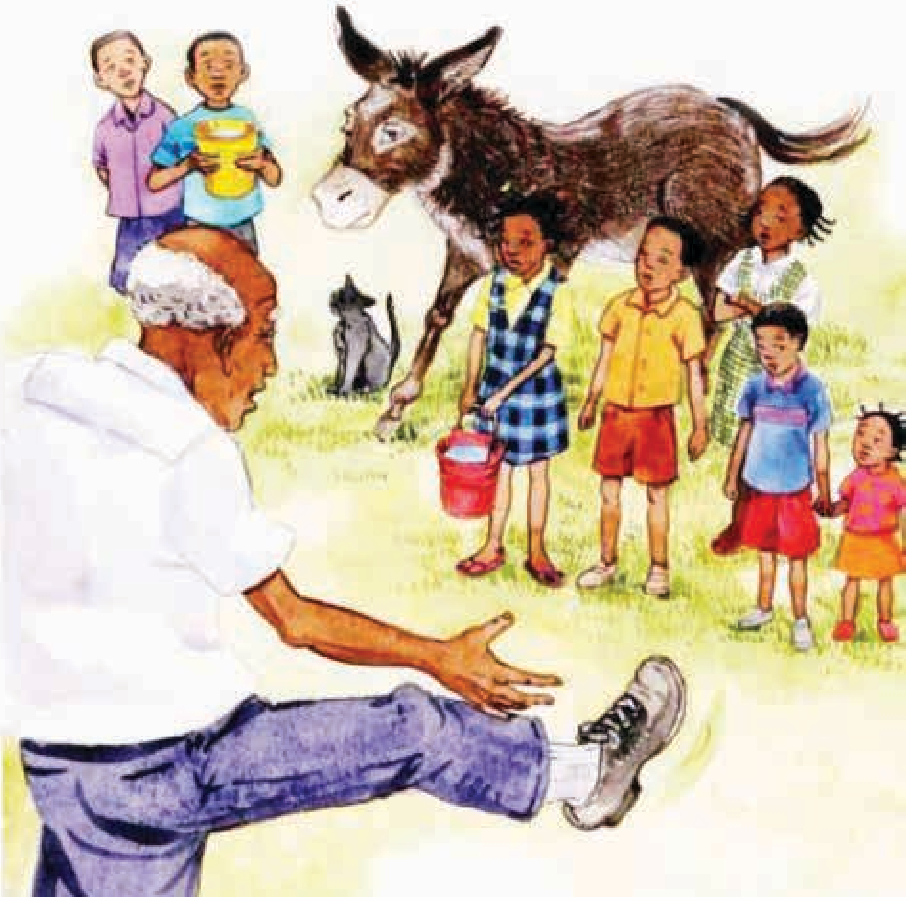

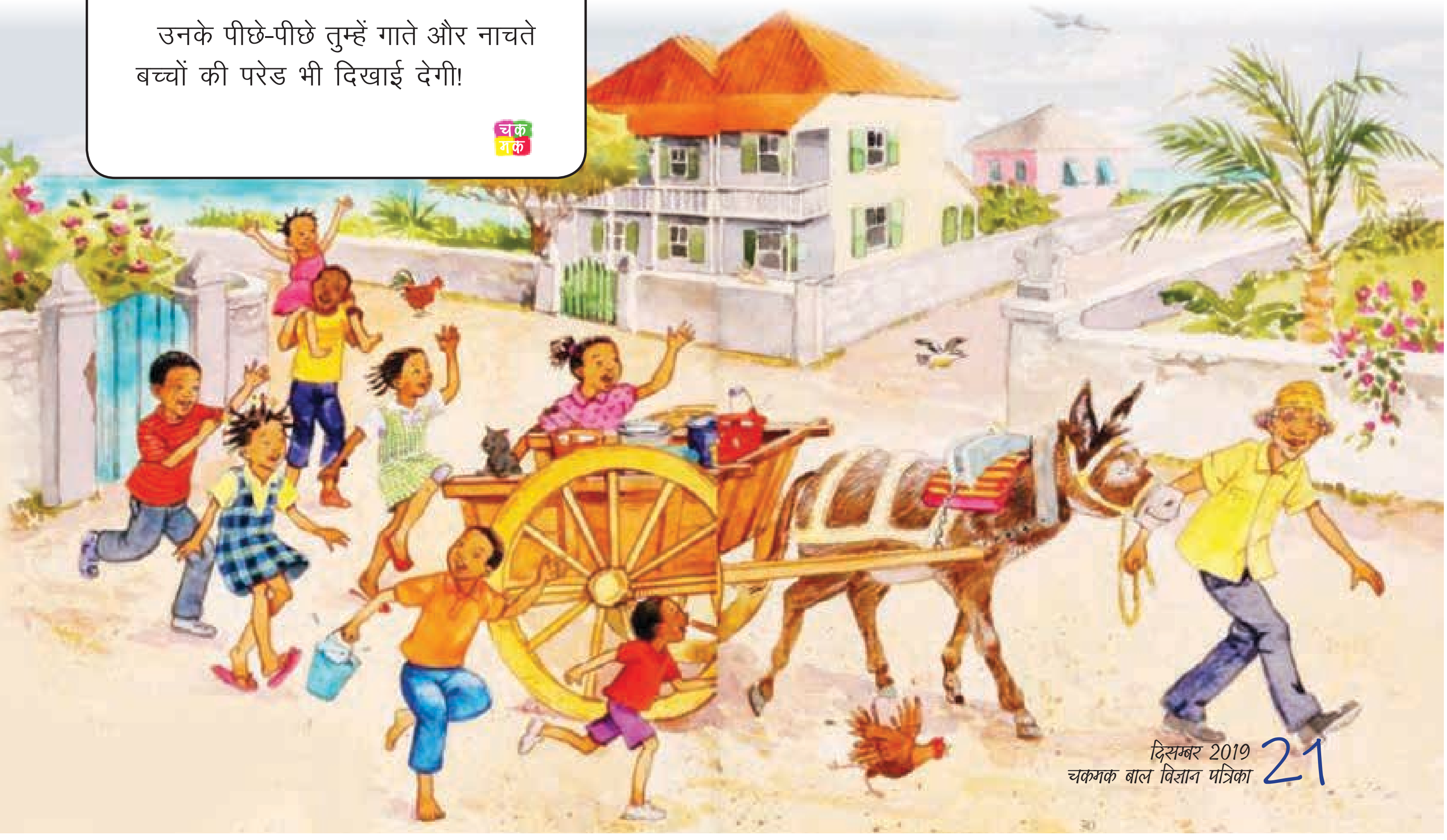

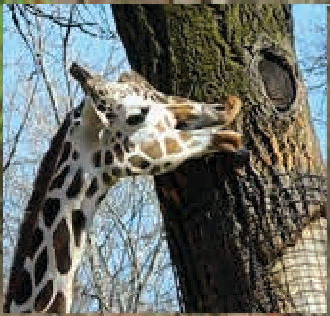

छाल

हम सब छाल खाते हैं

भृंग, दीमक, हाथी, हिरण, साही और यहाँ तक कि हम मनुष्य भी छाल खाते हैं!

छाल खाने वालों में तुम्हारी गिनती हो इसके लिए तुम्हें सिर्फ दो गुणों की ज़रूरत है। एक - तेज़ नुकीले मुखांग जिनसे तुम लकड़ी को काट सको और दूसरा - एक तगड़ा पाचन तंत्र जो सख्त लकड़ी को छोटे टुकडों में बाँट सके। ये दूसरी बात हम मनुष्य बहुत अच्छी तरह कर नहीं पाते हैं। सच तो यह है कि कुछ पेड़ों की छाल तो हमारे लिए ज़हरीली होती हैं।

हालाँकि, तुमने अगर दालचीनी खाई है, तो तुमने छाल खाई है। क्या तुम सोचकर बता सकते हो कि कोई और ऐसी छाल है जिसे हम खा सकते हैं?

अन्दर से मीठा व रसीला

दिखने में तो नहीं लगता है कि छाल का स्वाद बहुत अच्छा होगा, है ना? हाँ, ऐसा ज़रूर लगता है कि उसका स्वाद बिलकुल लकड़ी जैसा ही होगा।

छाल की बाहरी परत के बारे में यह कहना ज़्यादातर सही होगा कि वह मृत है। अन्दर की परत (जिसे फ्लोएम कहते हैं) में कुछ जीवित कोशिकाएँ होती हैं और साथ में एक पतली सैप। ये सैप शर्करा और पौधों के अन्य खाने को बहुत सारे पानी में घोल होता है। इस सैप को पौधे के अलग-अलग हिस्सों तक पहुँचाया जाता है। अतिरिक्त खाना भी छाल की इस अन्दरूनी परत में ही जमा हो जाता है। यह पतली अन्दरूनी छाल ही है, जिसे हम खा सकते हैं।

nature
conservation
foundation
science for conservation

फील्ड डायरी के लिए

छाल के रंग और बनावट से हम यह पता लगा सकते हैं कि वह किस पेड़ की छाल है। उदाहरण के लिए सफेदा की छाल चिकनी और पतली है जो समय-समय पर झड़ती रहती है। आम की छाल छूने में खुरदुरी होती है लेकिन इसके मोटे टुकड़े छीले जा सकते हैं। तो चलो, छाल को जाँचते हैं। जिस दिन बारिश न हुई हो उस दिन -

- अपने बगीचे में, सड़क के किनारे या मुहल्ले के पार्क में ऐसे पेड़ों को ढूँढो जिनकी अलग-अलग किस्म की छाल हैं - चिकनी, छिलकों वाली या छिलने वाली, खुरदुरी, गड्ढेदार, दरारदार, मगर की खाल सरीखी। कम-से-कम पाँच किस्म की छाल ढूँढना।
- हर छाल को करीब से देखो। दिखने में कैसी है? किस रंग की है? सूँघने में कैसी है? उसकी बनावट कैसी है? क्या तुम्हें उस पर चिपचिपे या कड़क गोले (राल या resin) दिखे?
- छाल को नज़दीक से देखो और उन सब कीटों और अन्य जीवों की सूची बनाओ, जिन्हें तुमने उन पर दौड़ते-सरकते हुए और उनकी दरारों में छिपे देखा। क्या तुम्हें छाल पर कोई फफूँद दिखी?
- एक कोरे कागज़ को पेड़ की छाल पर मज़बूती से रखो। पेंसिल, क्रेयॉन या कोयले को उस पर रगड़ो। चाहो तो अलग-अलग रंगों का इस्तेमाल करो। हर छाल के लिए ऐसा एक चित्र तैयार करना।
- अब सारे चित्रों को एक-दूसरे से मिलाओ। इनमें तुम्हें क्या फर्क नज़र आते हैं? क्या तुम्हें लगता है कि हर किस्म के पेड़ की छाल भी अलग किस्म की होती है?
- क्या तुम्हें इन पेड़ों पर कीट या फफूँद दिखे? कौन-से पेड़ पर तुम्हें सबसे ज़्यादा जीव दिखे?

प्रतियोगिता

छाल के बनाए चित्र हमें भेजना। chakmak@eklavya.in पर लिखकर हमें बताओ कि तुमने कितने किस्म की छाल देखी और किन पेड़ों पर कितने जीव देखे, और एक किताब जीतने का मौका पाओ।

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

क्यों-क्यों? क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था कि

गोल-गोल घूमने पर चक्कर क्यों आते हैं?

पहली से बारहवीं तक के बच्चों ने हमें अपने मज़ेदार जवाब भेजे हैं। तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें भेजना।

मुझे ऐसा लगता है कि हम जब गोल घूमते हैं तो हमारा दिमाग डाँस करने लगता है। और डाँस करने में वो इतना मगन हो जाता है कि इधर-उधर टकरा जाता है। टक्कर हो जाने के बाद चोट लगने पर चक्कर आता है।

आदित्य संजय दीक्षित, सातवीं, कमला निम्बकर बालभवन, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

●●●●●●●●●●●

गोल-गोल घूमने पर चक्कर क्यों आते हैं
चक्कर आने पर हम क्यों घूम जाते हैं
और फिर घूम जाने से किसी
चीज़ से क्यों टकराते हैं
मन में कई सवाल हैं
बहुत बड़ा बवाल है
गोल-गोल का फेर ये गोल है
कोई बतलाए कि क्या ये झोल है
अब तक इसकी छिपी हुई पोल है
जिसको कोई ना पाया आज तक खोल है
तो चलो एक साथ इसका पता लगाते हैं
कि गोल-गोल घूमने पर चक्कर क्यों आते है

गणपत हिमांशु, पाँचवीं, टेंडर इंटरनेशनल स्कूल पटना, बिहार

●●●●●●●●●●●

हमारे दिमाग में जो शब्द रहते हैं, वो सब घूम जाते हैं। इसीलिए हमें चक्कर आते हैं।

अनुष्का राजपूत, तीसरी, जी.एस.ए, देवास, मध्य प्रदेश

●●●●●●●●●●●

चक्कर इसलिए आता है क्योंकि जब हम घूमते हैं तो एक ही चीज़ बार-बार देखते हैं और वो भी तेज़ी-से। इस कारण हमारा देखने का सन्तुलन बिगड़ जाता है और हमारा सिर घूमता है। इसे हम चक्कर आना कहते हैं। जब हम रुकते हैं तो थोड़ी देर बाद हमारे देखने का तरीका सामान्य हो जाता है। और सर घूमना ठीक हो जाता है।

सुमन मण्डल, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

●●●●●●●●●●●

घूमते हुए मुझे लगा कि मेरे क्लास के बच्चे भी घूम रहे थे और मेरी क्लास भी घूम रही थी। मुझे एक चीज़ और लगी कि हमारी चैयर और टेबल भी घूमते हैं। सब कुछ घूमता है और हम भी घूमते हैं, इसलिए चक्कर आते हैं।

सृष्टि, तीसरी, एस.डी.एम.सी स्कूल, हौज़ खास, दिल्ली

●●●●●●●●●●●

हम जब घूमते हैं हमें हलकी-हलकी गुदगुदी-सी लगती है और हमको सब कुछ घूमता हुआ सा दिखाई देता है। और जब हम रुकते हैं तो हमें उल्टी-सा महसूस होता है। और हमें चक्कर-से आने लगते हैं।

सत्मय पाल, सातवीं, दीपालया कम्यूनिटी लाइब्रेरी, दिल्ली

●●●●●●●●●●●

जब हम गोल-गोल घूमते हैं तो हमारे कानों में उपस्थित सेंसिटिव मैटर (sensitive matter) भी गोल-गोल घूमने लगता है। यह मैटर हमारे ब्रेन को कन्ट्रोल करता है। जब हम घूमना बन्द कर देते हैं तो यह मैटर घूमता रहता है, जिसके कारण जब हम गोल-गोल घूमते हैं तो हमें चक्कर आते हैं।

आफरीन अन्सारी, ग्यारहवीं, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

●●●●●●●●●●●

चक्कर इसलिए आता है क्योंकि हमारे दिमाग में एक ऐसी चीज़ है जो घूमने पर रुकने में देर लगाती है जिससे वह हमें भी अपने साथ घुमाने की कोशिश करती है। और हम गिर जाते हैं जिसको हम चक्कर आना कहते हैं।

रिंकी सरकार, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

●●●●●●●●●●●

? क्यों-क्यों? क्यों-क्यों? क्यों-क्यों? क्यों-क्यों?

जब हम गोल घूमते हैं तो हम सब तेज़-तेज़ घूमते हैं। तो हमारे सामने रखी हरेक चीज़ भी घूमने लगती है और हमारा सिर और आँखें भी घूमने लगती हैं इसलिए हमें चक्कर आता है।

हर्षिता कौशले, नवीं, सी.वी. देवास, मध्य प्रदेश

हमारी कमज़ोरी होती है तथा जब हम गोल-गोल घूमते हैं तो हमारे हाथ-पैर टाइट हो जाते हैं। हमें थोड़ा-थोड़ा चक्कर आने लगता है और हमारा शरीर थोड़ा आराम चाहता है, तो हम लोग नहीं गिरते। अगर हम लोग न रुके तो हम गिर सकते हैं। अगर हम गिर जाएँ तो हम लोगों को चोट लग सकती है।

हर्षित रावत, पाँचवीं, अपना तालीम घर, करम अली का पुर्वा

जब पृथ्वी गोल-गोल घूमती है तो हमें ज़रा-सा भी एहसास नहीं होता है। और हम और पृथ्वी दोनों साथ-साथ गोल-गोल घूमते हैं, तो हमें चक्कर आता है।

तन्ज़िबा-फातिमा, चौथवीं, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

क्योंकि हम अपने ऊपर नियन्त्रण नहीं रख पाते कि अब हम क्या करें। फिर हमारी सोचने की क्षमता भी खतम हो जाती है। फिर हमारा मन उल्टी करने का करता है और फिर हमारे अन्दर सारी ताकत खतम होने लगती है। और हम अपने आप खड़े होने की ताकत को खो देते हैं। और फिर हम कमज़ोरी का शिकार हो जाते हैं और हम बेहोश हो जाते हैं।

मनीष पाल, आठवीं, दीपालया कम्यूनिटी लाइब्रेरी, दिल्ली

हम जब गोल फिरते हैं तब हमारा दिमाग भी फिरता है। दिमाग कहता है अब बस कर मुझे गोल-गोल फिरने से नींद आ गई है। मुझे सोने दो। तो दिमाग सो जाता है। और हमें चक्कर आ जाता है।

साया सालवे, छठवीं, कमला निम्बकर बालभवन, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

हमरो शरीर को बैलेंस करने में हमारे कान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कान में एक प्रकार का लिक्विड होता है जो शरीर को बैलेंस करता है। जब हम गोल-गोल घूमते हैं तो हमारे कानों का लिक्विड भी घूमता है। जब हम गोल-गोल घूमने के बाद रुकते हैं तो वो लिक्विड घूमता रहता है। इस कारण से हमारा दिमाग चकराता है।

कशिश, पाँचवीं, दीपालया कम्यूनिटी लाइब्रेरी, गोला कुआँ, दिल्ली

जब हम घूमते हैं तो हमें सब कुछ बार-बार दिखाई देता है। हमारी आँखें नीचे देखती हैं और हमारी आँखें वहीं अटकी रहती हैं। इसलिए हमें चक्कर आते हैं।

ऐश्वर्या, तीसरी, एस.डी.एम.सी. स्कूल, हौज़ खास, दिल्ली

चक्कर इसलिए आता है क्योंकि पृथ्वी हमेशा घूमती रहती है और अगर हम भी पृथ्वी के ऊपर रहकर गोल-गोल घूमें तो ही हमें चक्कर आते हैं।

अभिषेक धाली, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

जब हम गोल-गोल घूमते हैं तो हमारा भेजा सिर के एक तरफ चला जाता है और दिमाग के तार टूट जाते हैं। इसकी वजह से दिमाग की परेशानियाँ कुछ बढ़ जाती हैं और हमें चक्कर आने लगता है। और फिर किसी ऐसी जगह चोट आ जाती है कि रात भर रोना पड़ता है।

अमेय मोहिते, सातवीं, कमला निम्बकर बालभवन, फलटण,सतारा, महाराष्ट्र

जब मैं कथक सीख रही थी तब मैंने सीखा कि हमें एक पाइंट पकड़ना चाहिए और गोल घूमकर उसी जगह यानी उसी पाइंट पर नज़र आनी चाहिए। इसकी वजह से हमें चक्कर नहीं आता।

अनुष्का विनोद, सातवीं, कमला निम्बकर बालभवन, फलटण,सतारा, महाराष्ट्र

गोल-गोल घूमने से इस कारण चक्कर आता है क्योंकि उससे हमारा शरीर काम करना बन्द कर देता है।

अंशिका रानी, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

क्यों-क्यों?

क्योंकि गोल-गोल घूमने से हमारा दिमाग सन्तुलन खो देता है और हम समझ नहीं पाते कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। इस वजह हमारे दिमाग की नस डिस्टर्ब हो जाती है जिसकी वजह से हमें चक्कर आता है।

जहीन सलमानी, छठवीं, अपना तालीम घर

हमारा जवाब

जवाब तुम्हारे सिर में है! जब भी तुम्हारा सिर हिलता है तो तुम्हारे कानों के अन्दरूनी हिस्से में मौजूद द्रव पदार्थ भी उसी दिशा में, लगभग उसी गति से हिलता है। ये द्रव पदार्थ जिन नलियों में हैं, उसकी कोशिकाओं के सूक्ष्म रोम भी द्रव पदार्थ के हिलते उसी दिशा में झुक जाते हैं। इसकी जानकारी हमारे मस्तिष्क तक जब तंत्रिकाएँ पहुँचाती हैं, तो हमें अपनी गति व दिशा का एहसास होता है।

तो बात वहाँ से शुरू करते हैं जब तुम एक जगह खड़े होते हो। तुम्हारा सिर हिल नहीं रहा है और न ही अन्दरूनी कान का द्रव पदार्थ। अब तुम गोल-गोल घूमने लगते हो और कुछ समय के लिए घूमते रहते हो। ऐसे में कानों का द्रव भी घूमता रहता है और अन्दरूनी कान के रोम एक ही दिशा में झुकते हैं। इस कारण हमारा मस्तिष्क हमें लगातार चक्कर खाने का एहसास दिलाता है। जब हम रुकते हैं तो शरीर और सिर भले ही रुक जाते हैं, पर वो द्रव कुछ समय के लिए नलियों में घूमता रहता है। ऐसा इसिलए, क्योंकि ठोस पदार्थ एकदम से रुक सकते हैं लेकिन तरल पदार्थ को एक बार गति मिलती है तो वह रुकने के लिए समय लेते हैं। कानों के रोम भी झुके रहते हैं। और जब तक द्रव का घूमना रुकता नहीं है और रोम सीधे नहीं हो जाते हैं, हमें चक्कर खाने का एहसास होता रहता है।

कहानी पूरी करो

आदि ने जैसे ही आँखें खोलीं वह हड़बड़ाकर उठी। यह तो उसका घर नहीं था! उसके घर से दिखने वाला समुद्र भी दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था। इस कमरे की दीवारें गीली बोरियों से बनी हुई थीं। उसके सामने वाली दीवार का दरवाज़ा खुला था। उससे एक रास्ता अँधेरे की तरफ कहीं जा रहा था। आदि ने उस दरवाज़े की तरफ कदम बढ़ाया ही था कि उसकी नज़र दूसरे दरवाज़े पर पड़ी। दरवाज़े के सामने एक विशालकाय गदाधारी इन्सान-जानवर किसी की रखवाली कर रहा था। उसी दरवाज़े के चौखट पर चोगा पहने हुए एक छोटा-सा एलियन कुछ बुदबुदाता-बड़बड़ाता इधर-उधर चले जा रहा था। इससे पहले कि आदि कुछ समझ पाती वहाँ...

एक अजीब-सी रोशनी चमकती है और अचानक से आदि एक सुपरहीरो बन जाता है और उसे पता चलता है कि वह एलियन पृथ्वी को तबाह करना चाहता है। इसलिए उसने उस गदाधारी व्यक्ति को बनाया था पृथ्वी को तबाह करने के लिए। आदि को जब यह पता चला तो उसने उस गदाधारी व्यक्ति को अपनी शक्ति से हराया और पृथ्वी को तबाह होने से बचा लिया। फिर अचानक से उसके कानों में कुछ आवाज़ आने लगी। जब उसने आँखें खोलीं तो अपनी मम्मी को देखा। उसने सारी बात अपनी मम्मी को बताई। फिर वो अपने स्कूल चला गया। उसको पता चल गया था कि वह एक सपना था जो कभी सच नहीं हो सकता।

अन्नू बिस्वास, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

उसने देखा तो एलियन डरकर भाग गया जो दरवाज़े पर पहरा दे रहा है था। तो वह दरवाज़े के अन्दर चला गया, फिर वह चलता गया। फिर उसने देखा कि दरवाज़े के पास बहुत सारे फूल व फल रखे थे।

रानी, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

आदि ने जैसे ही आँखें खोलीं वह हड़बड़ाकर उठी। यह तो उसका घर नहीं था। उसके घर से दिखने वाला समुद्र भी दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था। इस कमरे की दीवारें गीली बोरियों से बनी हुई थीं। उसके सामने वाली दीवार का दरवाज़ा खुला था। उससे एक रास्ता अँधेरे की तरफ जा रहा था। आदि ने उस दरवाज़े की तरफ कदम बढ़ाया ही था कि उसकी नज़र दूसरे दरवाज़े पर पड़ी। दरवाज़े के सामने एक विशालकाय गदाधारी इन्सान किसी की रखवाली कर रहा था। उसी दरवाज़े की चौखट पर चोगा पहने हुए एक एलियन कुछ बुदबुदाता-बड़बड़ाता इधर-उधर चले जा रहा था। इससे पहले कि आदि कुछ समझ पाती वहाँ एक और एलियन आ गया। पहले वाला एलियन बोला, "तू मेरे इलाके में कैसे आ गया?" दूसरा एलियन बोला, "यह इलाका मेरा है।" फिर उन दोनों के बीच ज़बरदस्त झगड़ा हो गया। आदि बोली, "तुम झगड़ा मत करो। तुम दोनों में से मेरे घर से दिखने वाला समुद्र जो देख लेता है, उसी का यह इलाका है। एक को उड़ना आता था और छोटे एलियन को उड़ना नहीं आता था तो वह उछल-उछलकर देखने लगा। बड़ा एलियन उड़कर देखने लगा तो उसे समुद्र दिखाई दे गया। वह बोला मुझे समुद दिख रहा है। अब यह इलाका मेरा है। यह सुनकर छोटा एलियन निराश हो गया। आदि ने सोचा कि मैं दूसरी शर्त रखती हूँ। इस बेचारे को तो उड़ना ही नहीं आता है। वह उन दोनों से बोली कि जो दौड़कर समुद्र को देखकर पहले वापस आएगा यह इलाका उसी का है। बड़ा एलियन नहीं माना। वह बोला कि पहली शर्त मैं जीता हूँ। इसलिए यह इलाका मेरा है। आदि बोली ि इससे उड़ना नहीं आता है लेकिन बड़ा एलियन नहीं माना। आदि बहुत देर तक कहती रही। तब उसने हाँ भरी। उन्होंने दौड़ लगाई। फिर छोटा एलियन समुद्र देखकर जल्दी वापस आ गया। फिर आदि बोली कि यह इलाका छोटे एलियन का है। बड़ा एलियन बोला कि इसने बेईमानी की है। यह आधो रास्ते में से ही आ गया है। आदि बाली कि तुम वापस समुद्र देखकर आओ। फिर उन दोनों ने वापस दौड़ लगाई। छोटा एलियन रास्ते में ही थक गया। इस कारण वह पीछे रह गया और बड़ा एलियन जल्दी वापस आ गया। फिर आदि बोली कि यह इलाका बड़े एलियन का है। यह सुनकर बड़ा एलियन खुश हुआ और छोटा एलियन बहुत दुःखी हुआ और वहाँ से चला गया।

मनकुश गुर्जर, समूह-सागर, उम्र-11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा (टोंक)

स्कंध, आठ वर्ष, पूर्णा लर्निंग सेंटर, बैंगलुरु, कर्नाटका

आदि ने जैसे ही आँखें खोलीं वह हड़बड़ाकर उठी। यह तो उसका घर नहीं था। उसके घर से दिखने वाला समुद्र भी दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था। इस कमरे की दीवारें गीली बोरियों से बनी हुई थीं। उसके सामने वाली दीवार का दरवाज़ा खुला था। उससे एक रास्ता अँधेरे की तरफ जा रहा था। आदि ने उस दरवाज़े की तरफ कदम बढ़ाया ही था कि उसकी नज़र दूसरे दरवाज़े पर पड़ी। दरवाज़े के सामने एक विशालकाय गदाधारी इन्सान किसी की रखवाली कर रहा था। उसी दरवाज़े की चौखट पर चोगा पहने हुए एक एलियन कुछ बुदबुदाता-बड़बड़ाता इधर-उधर चले जा रहा था। इससे पहले कि आदि कुछ समझ पाती वहाँ से दबे पाँव चलकर अँधेरे रास्ते की तरफ चल पड़ी। उसे कई सारे जानवर मिले पर उसके किसी ने कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचाया क्योंकि यह सब जानते थे कि यह विशाल लड़की है।

आदि जब एक रास्ते से गुज़री तो उसने एक झोपड़ी देखी। वह झोपड़ी बहुत से पकवानों से बनी हुई थी। तभी उसने सीढ़ी पर पैर रखा तो वह झट-से उस झोपड़ी के अन्दर चली गई। आदि यह देखकर आश्चर्यचकित रह गई। उसने जैसे ही मिठाई की बनी फर्श को छुआ तो वहाँ से रास्ता होकर अन्दर के सारे दरवाज़े खुल गए। आदि ने सोचा कि यह तो कोई जादुई झोपड़ी है। थोड़ी देर बाद एलियन को पता चला कि आदि यहाँ से भाग चुकी है। तो एलियन अँधेरे रास्ते की तरफ तेज़ी-से दौड़ा। उसने सभी जानवरों से पूछा कि तुमने एक लड़की को देखा है क्या। वे सभी जानवर जानते थे फिर भी उन्होंने एलियन को कुछ नहीं बताया। एलियन आगे बढ़ता ही गया। वह उसी के पास जा पहुँचा जहाँ आदि रहती थी।

एलियन ने जब वह झोपड़ी देखी तो उसने सोचा यह मिठाइयों की दुकानें हैं। झोपड़ी के अन्दर से आवाज़ आई तुम मेरी झोपड़ी को मत गिराओ। एलियन ने जब सीढ़ी पर पैर रखा तो उसने ऐसा धक्का मारा कि वह बहुत दूर जाकर गिरा। एलियन अपने घर की तरफ दौड़ता हुआ चला गया। आदि अब खतरे से बाहर थी और वह उसी झौपड़ी में रहने लगी।

अन्तिमा गुर्जर, समूह-सागर, उम्र-12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा (टोंक)

पक्का वादा

द्वारका
चित्र: हबीब अली

मेरा नाम द्वारका है। मैं 16 साल का हूँ। बचपन से ही मैं अपनी मम्मी को गुटखा खाते देखता। मैं पूछता, “मम्मी, क्या खाती हो?” तो मम्मी कहतीं, “गुटखा”। मेरे दोस्त लोग भी गुटखा खाते थे। हमारे मोहल्ले में बच्चों से लेकर बड़े सभी गुटखा खाते हैं। मैंने सोचा कि जब सभी गुटखा खाते हैं, तो मैं क्यों नहीं?

एक दिन मैंने मम्मी से माँगा तो मम्मी ने 2-3 दाने दे दिए। जब पहली बार मैंने गुटखा खाया तब शायद मैं 6-7 साल का था। मैंने गुटखा खाया तो कुछ अजीब-सा लगा। कड़वा था। ऐसा लग रहा था जैसे वो गाल से चिपक गया था या गाल छिल गया था - ठीक से समझ नहीं आ रहा था। पर सब खाते थे तो मैं भी रोज़ खाने लगा।

कुछ ही दिनों में गुटखा मेरी पसन्दीदा चीज़ों में शामिल हो गया। ये भी कह सकते हैं कि गुटखा खाने की मेरी आदत बन गई। मैंने तो गुटखा खाने का टाइम-टेबल ही बना लिया था। सुबह उठते से एक बार, फिर चाय के बाद, फिर 12 बजे खाना खाने के बाद और रात को खाने के बाद। इस तरह दिनभर में 4-5 बार मैं गुटखा खाता ही खाता था। इसके अलावा कभी दोस्तों के साथ तो कभी मम्मी से माँगकर भी खा लेता था। इसका तो कोई हिसाब नहीं था। मुझे इतनी आदत हो गई थी कि खाने-पीने के समय को छोड़कर बाकी पूरे समय मुँह में गुटखा रहता। हर रोज़ मैं 10-20 रुपए का गुटखा खा लेता था।

जब मैं अपनी नानी के घर रहने आया तो मेरी मौसी मुझे गुटखा नहीं खाने देती थीं। मैं जब भी गुटखा खाकर उनके पास बैठता तो उनको पता चल जाता। वो मुझे डाँटतीं और कहतीं, “जा गुटखा थूक कर आ। इसकी बदबू इतनी बुरी है कि मैं मर जाऊँगी।” मैं सोचता, “जिससे मुझे इतनी खुशबू आती है, मौसी को उससे बदबू क्यों आ रही है?” मौसी कहतीं, “अगर गुटखा खाएगा, तो मैं तुझे अपने पास नहीं रखूँगी।”

मैं नानी के घर अपनी पढ़ाई करने के लिए आया था। मैं सोचता कि अगर मौसी ने भगा दिया तो फिर पढ़ाई छूट जाएगी। इससे तो अच्छा है कि गुटखा ही छोड़ दूँ। मैं सोचता था, पर छोड़ नहीं पा रहा था। फिर मैं छुप-छुपकर खाने लगा।

मौसी कहतीं कि जितने पैसे का गुटखा खाता है, उसका कुछ अच्छा ही खा लेता। इसे खाने से कैंसर होता है। और ये हर गुटखे के रैपर पर साफ-साफ लिखा भी रहता है। मौसी ने मुझे दिखाया भी। मौसी कहने लगीं कि अगर तुझे कैंसर हो गया तो कहाँ से इलाज होगा, ये सोचा है कभी? आज के बाद कभी गुटखा खाते दिखा, तो देखना कैसा मारती हूँ।

मौसी ने उस दिन बहुत लम्बी-चौड़ी डाँट सुनाई। उनकी डाँट सुनकर मैंने अपने हाथ में रखा आधा गुटखा बालकनी से बाहर फेंक दिया। उस दिन से मैंने ये तय कर लिया कि आज के बाद मैं गुटखा नहीं खाऊँगा। और अगले दिन से ही मैंने गुटखा खाना बन्द कर दिया। पर मुझे बहुत बैचैनी होती थी, गुटखे की बहुत याद आती थी। मेरे हाथ अपने आप पैसे निकालने के लिए मौसी के बैग की तरफ बढ़ते। मौसी बैग छिपाकर रखने लगीं। मेरे कानों में गुटखा मिलाने की आवाज़ें गूँजा करती थीं। किसी को गुटखा खाते देखता तो मेरे हाथ उसके आगे अपने आप ही बढ़ने लगते। मैं मौसी की डाँट और अपनी पढ़ाई के बारे में सोचने लगता। कभी-कभी स्कूल से लौटते वक्त मेरे पैर गुटखे की दुकान की ओर मुड़ने लगते, पर पूरी कोशिश करके मैं अपने आप को पीछे खींच लेता। मैं चलता तो सीधे रास्ते, पर मेरा चेहरा दुकान की तरफ ही रहता। मैं दुकान पर टँगे गुटखों को टकटकी लगाए देखता रहता। कैसे भी करके मैं गुटखा नहीं खाने के लिए खुद को मनाता रहता, क्योंकि मैंने खुद से वादा किया था कि मैं गुटखा नहीं खाऊँगा।

इस तरह लगातार 20-25 दिन मैंने कोशिश जारी रखी। मैं बहुत परेशान होता था। हर वक्त गुटखे का ख्याल मन में रहता। कभी उसे खाने के समय की याद के रूप में, तो कभी कैसे छोड़ूँ इस सवाल के रूप में। चौबीसों घण्टे गुटखा मन में बना रहता। जब मैं हिसाब लगाता कि कितने दिन हुए गुटखा नहीं खाया, तो मन में खुशी भी होती कि इतने दिनों में मैंने एक बार भी गुटखा नहीं खाया है। गुटखा नहीं खाता था, पर मुँह को टाइम-टाइम से कुछ चबाते रहने की आदत हो गई थी। यह आदत बैचेन करती, तो मैं सौंफ खा लेता था।

इस तरह मैंने खुद से किया वादा पूरा किया और गुटखा खाना छोड़ दिया।

बस में बैठे बीस

रमेश थानवी

बस में बैठे बीस
बाहर निकले तीस
बीस-तीस का चक्कर
समझ न पाया कंडक्टर
सारी बस थी खाली
कंडक्टर था जाली।

एकलव्य द्वारा प्रकाशित बाल कविता संग्रह *हाउ हाउ हप्प* से साभार

माउंट एवरेस्ट चढ़ने का जुनून

लाखपा शेर्पा 9 बार माउंट एवरेस्ट चढ़ चुकी हैं और दसवीं बार चढ़ने की तैयारी में हैं। वे नेपाल की पहली महिला हैं जो सन 2000 में इस पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर लौट आईं। अमेरिका में रहने वाली लाखपा दो बच्चों की माँ हैं और न्यूनतम वेतन के लिए बर्तन साफ करती हैं। जब वे घर छोड़कर पहाड़ चढ़ने जाती हैं तो इस बात का हमेशा डर रहता है कि कहीं अपना घर न खो बैठें। वापिस आकर घरों की सफाई, सुपरमार्केट में काम कर लेती हैं, लेकिन कभी किसी को बताती नहीं हैं कि वे माउंट एवरेस्ट की ऊँचाइयों तक जाकर आई हैं। 15 साल की उम्र से, हिमालय के पहाड़ों पर चढ़ने वाले टूरिस्ट का समान उठाकर चलने वाली लाखपा को ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ने का जुनून है।

दुनियाभर में, खासकर पश्चिमी देशों में बढ़ती हुई आबादी, आमदनी और शहरीकरण के कारण माँस के लिए मवेशियों व मुर्गियों का पालन बढ़ रहा है। लेकिन प्राकृतिक संसाधन पर निर्भर यह उद्योग इस बढ़ती माँग को शायद पूरा नहीं कर पाएगा। इसलिए पिछले कुछ दशकों से कृत्रिम यानी कि लैब में बनाए गए माँस पर शोध चल रहा है। ये माँस टिशू कल्चर तरीके से बनाए जाते हैं। जानवरों की कुछ खास कोशिकाओं को लैब में ऐसे रसायनकि माध्यम में रखा जाता है जिसमें वे माइटोसिस के होते अपनी प्रतियाँ बना पाते हैं। इस तरह उनकी संख्या बढ़ती है और ऊतक बनते जाते हैं। कुछ सालों पहले लैब में सफलता पूर्वक माँस बनाया गया। हाल ही में अमेरिका की एक कम्पनी ने चिकन का माँस भी ऐसे ही बनाया। उनका कहना है कि इसका स्वाद उतना ही मज़ेदार है, जितना ब्रॉयलर का माँस। कृत्रिम माँस अभी खुले बाज़ार में तो मिलता नहीं है, लेकिन जल्द ही अमेरिका के कुछ रेस्तराँ में इनसे बनाए पकवान परोसे जाएँगे। कुछ लोगों का मानना है कि वो दिन दूर नहीं जब सुपरमार्केट में तुम्हें दोनों किस्म का माँस मिलेगा।

ज़िन्दा जानवरों से बना माँस

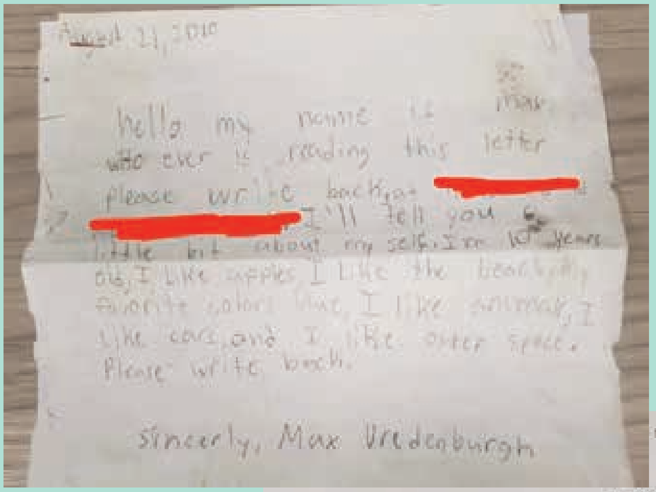

August 21, 2010

hello my name is Max
who ever is reading this letter
please write back [redacted]
[redacted] I'll tell you a
little bit about my self. I'm 10 years
old, I like apples I like the beach, my
favorite color blue, I like animals, I
like cars, and I like outer space.
Please write back.

Sincerly, Max Vredenburgh

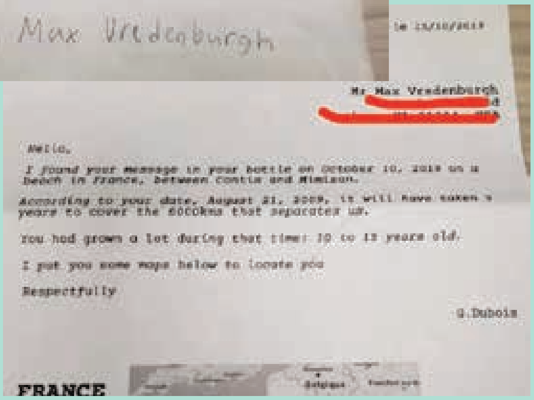

le 15/10/2019

Mr Max Vredenburgh
[redacted]

Hello,

I found your message in your bottle on October 10, 2019 on a beach in France, between Contis and Mimizan.

According to your date, August 21, 2009, it will have taken 9 years to cover the 6000kms that separates us.

You had grown a lot during that time: 10 to 19 years old.

I put you some maps below to locate you

Respectfully

G.Dubois

FRANCE

ट्विटर पर पोस्ट मैक्स की चिट्ठी और उसका जवाब

बोतल में सन्देश

अमेरिका के उत्तर में बॉस्टन शहर के समुद्रतट पर अगस्त 2010 में एक 10 साल के लड़के ने एक चिट्ठी लिख बोतल में बन्द कर दी और अटलांटिक महासागर में फेंक दी। मैक्स व्रैण्डैनबर्ग ने उस चिट्ठी में अपनी कुछ पसन्दीदा चीज़ों के बारे में लिखा था - जैसे सेब, स्पेस, समुद्रतट और यह भी कि जिसे भी वह चिट्ठी मिले उसे जवाब ज़रूर लिखे। 10 अक्टूबर 2019 को मैक्स को उसके पिताजी से एक मैसेज मिला कि जी डूबुआ नामक व्यक्ति ने उन्हें उसके नाम परएक चिट्ठी भेजी है। और उसके साथ मैक्स का 9 साल पुरानी बोतल में भेजा हुआ सन्देश भी है। दिलचस्प बात है कि 9 साल में 6000 किलोमीटर दूरी तय करके बोतल अमेरिका से फ्रांस पहुँची और किसी के हाथ भी लग गई।

किताबें कुछ कहती हैं...

पुस्तक समीक्षा

किताबों की दुनिया में जाने का एक रास्ता है किताबों की समीक्षाएँ। इस बार हमने बच्चों से कहा कि अपनी मनपसन्द किताबों के बारे में वे क्या सोचते हैं, हमें लिख भेजें। उनकी लिखी समीक्षाओं में से कुछ हम यहाँ छाप रहे हैं।

तुमने भी अगर कोई किताब या कोई कहानी-कविता वगैरह पढ़ी हो और उसके बारे में तुम कुछ कहना चाहो तो हमें लिख भेजना। क्या अच्छा लगा और क्या अच्छा नहीं लगा... हम तुमसे सुनना चाहेंगे।

कन्ना पन्ना

लेखक - ज़ाई विटेकर

समीक्षा : सन्तोष धुर्वे, मुस्कान संस्था भोपाल, मध्य प्रदेश

कहानी में खास बात यह है कि जब वो बच्चा कन्ना गुफाओं में घूमने गया तो लाइट जाने के कारण उसकी ज़िन्दगी में बहुत कुछ बदल गया। पहले वो बोलता नहीं था लेकिन बाद में बहुत बोलने लगा और वो हमेशा शब्दों से खेलता रहता था। कन्ना देख नहीं पाता था। फिर भी उसने सबकी मदद की। कहानी पढ़कर सब लोग यह बात समझेंगे कि वो लोग भी मदद कर सकते हैं और उसको खुशी भी हुई कि लोगों ने उस पर भरोसा किया। जब मुरुगन ने कन्ना से बोला कि तुझे दिखाई नहीं देता क्या और कन्ना ने बोला कि नहीं, तो मुरुगन घबरा गया कि मैंने गलत बोल दिया। मैंने भी अपने दोस्त दादू से एक बार बोला कि जा तेरा दोस्त नहीं रहूँगा तो बाद में मैं भी मुरुगन के जैसे घबरा रहा था कि मैंने गलत बोल दिया।

यह कहानी बाकी कहानियों से अलग है क्योंकि यह एक ऐसे बच्चे की कहानी है जो देख नहीं पाता है। कहानी में अलग तरह से बातें लिखी हैं। दूसरी भाषा के शब्द चित्ती, चितप्पा, अप्पा कहानी में हैं।

कहानी के चित्रों और नामों से समझ में आ रहा है कि कहानी अन्ना लोगों के तरफ की है। कहानी के चित्र कार्टून जैसे लग रहे हैं। ऐसी कहानियाँ और भी बननी चाहिए क्योंकि इन्हें पढ़ने में मज़ा भी आता है और सीखने को भी मिलता है। इन कहानियों को पढ़कर बच्चे देख न पाने वाले बच्चों की इज़्ज़त करेंगे और उन पर भरोसा भी करेंगे दोस्ती करने का।

इस कहानी को पढ़कर मैंने सीखा कि अपने मन पर विश्वास होना चाहिए। जैसे कन्ना ने सबकी मदद की वैसे ही एक बार मेरे दोस्त समीर ने मेरी मदद की थी। एक दिन जब मैं पानी में डूब रहा था तो मुझे लग रहा था कि मैं मर जाऊँगा तो उसने मुझे पानी से बाहर निकाल लिया। फिर उसके पास पैसे नहीं थे और हम लोग मेला गए थे तो मैंने उसे झूला झुलवाया और चाउमीन भी खिलाया।

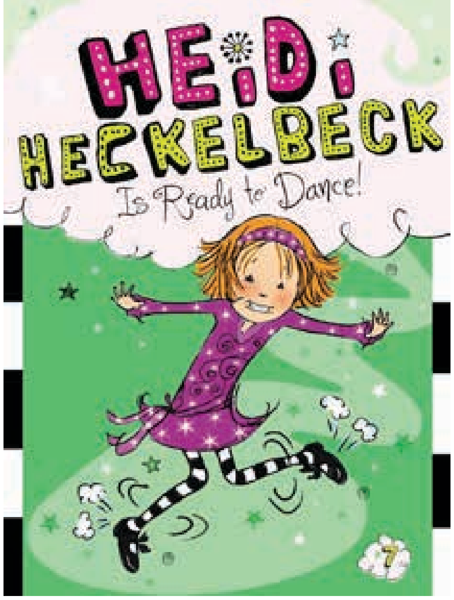

हेडी हेकेलबेक इज़ रेडी टू डाँस

लेखक : वेंडी कोवेन

समीक्षा : शगुन नरोला, दूसरी, दि हेरीटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

हेडी हेकेलबेक मेरी पसन्दीदा पात्र है क्योंकि टैलेंट शो के दौरान वो कभी भी हार नहीं मानती। यह किताब हमें बताती है कि हमें कभी भी हार नहीं मानना चाहिए और उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। इस किताब में बहुत सारे मज़ेदार लम्हें हैं।

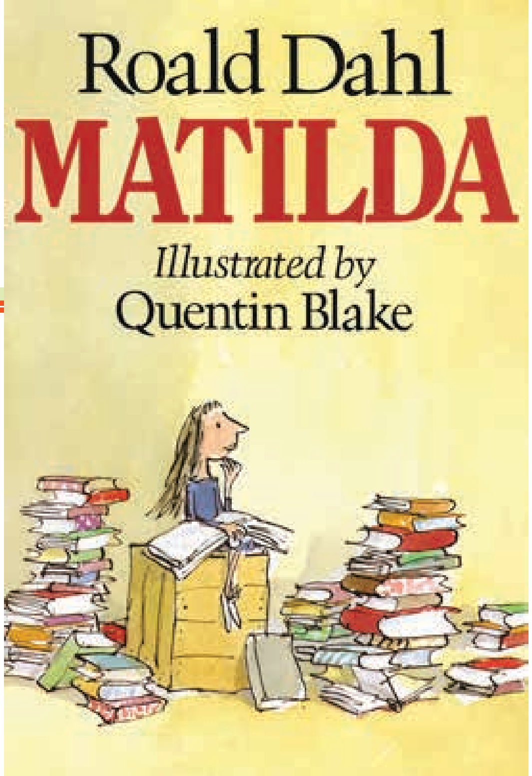

मैंने बहुत-सी किताबें पढ़ी हैं लेकिन सबसे अच्छा मुझे अँग्रेज़ी उपन्यास *मटिलडा* लगा। यह रुआल्ड डाल ने लिखा है। यह एक लड़की की ऐसी कहानी है जो पढ़ाई से सम्बन्धित तो है, लेकिन थोड़ा आश्चर्यचकित भी करती है। पहले तो जब मैंने इसे पढ़ना शुरू किया तो मुझे यह थोड़ी बेकार लगी क्योंकि पढ़ाई से सम्बन्धित किताब पढ़ना मुझे पसन्द नहीं था। लेकिन जब मुझे अपने स्कूल से होमवर्क मिला कि इस किताब के बारे में लिखना है तब तो इसे पढ़ना ही पढ़ा। इसमें एक लड़की थी मटीलडा। उसके माँ-बाप उसे पसन्द नहीं करते थे। वो जब एक साल की थी तब से पढ़ने लगी। जब उसने स्कूल जाना शुरू किया तो उसे एक शिक्षिका मिलीं जो बहुत अच्छी थी। वो समझ गईं कि मटीलडा ऊँचे स्तर की पढ़ाई करती थी। आगे चलकर कुछ ऐसा हुआ जो समझ के बाहर था। पढ़ते-पढ़ते मटीलडा को एक ऐसी अलौकिक शक्ति मिली कि वह अपनी आँख से सब कुछ हिला सकती थी। उसके स्कूल की प्रधानाध्यापिका बहुत हिंसक थी। मटीलडा की शिक्षिका उनकी भतीजी थी। शिक्षिका के माता-पिता मर गए थे इसलिए प्रधानाध्यापिका ने उनकी सारी प्रॉपर्टी ले ली थी। तो मटीलडा ने उनसे बदला लेने का सोचा। अन्त में मटीलडा शिक्षिका के पास रहने लगी। इस कहानी में बहुत सारी चीज़ें अटपटी लगीं लेकिन इसमें हँसी भी बहुत आई। मुझे उस तरह की किताबें ज़्यादा पसन्द हैं जो मुझे अलग ही दुनिया में ले जाएँ। अगर इस तरह की और भी किताबें मुझे मिलें तो मैं ज़रूर पढ़ना चाहूँगी। मगर पढ़ना भी चाहिए तो लिमिट में, मटीलडा की तरह लिमिटलैस नहीं।

मटिलडा

लेखक: रुआल्ड डाल
समीक्षा: राजेश्वरी नन्दनी, नवीं
किलकारी बाल भवन, पटना, बिहार

मुकुन्द और रियाज़

लेखक: नीना सबनानी
समीक्षा: कुलदीप कनौजिया, नवीं, स्वतंत्र तालीम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

ये कहानी बहुत ही अच्छी है बच्चों के लिए। इसमें दिखाया गया है कि धर्म, भेदभाव, छुआछूत और जाति सब दोस्ती के सामने घुटने टेक देते हैं। यह कहानी है दो दोस्तों की जो पाकिस्तान में रहते थे। एक हिन्दु था और एक मुस्लिम था। पाकिस्तान में लड़ाई छिड़ने पर रियाज़ अपने दोस्त मुकुन्द को हिन्दु समझकर नहीं, बल्कि अपना दोस्त समझकर उसे पाकिस्तान से इंडिया पहुँचाने में मदद करता है। और ये पूरी कहानी मुकुन्द अपने बेटे को सुनाता है जिससे उसके अन्दर भी अच्छे विचार आते हैं। इस कहानी से पता चलता है कि दोस्ती से बड़ा इस संसार में कोई धर्म नहीं है।

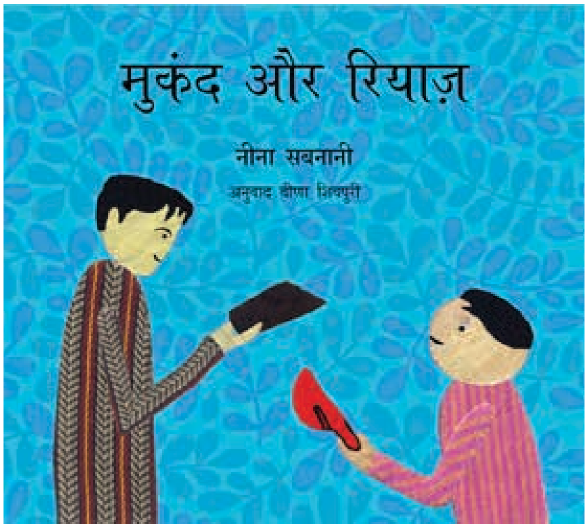

ऐसा लगा...

सुहानी कुमारी
चित्र: उमेश

एक दिन पेड़ पर एक
चिड़िया बैठी हुई थी।
मैंने उसे देखा तो मुझे
ऐसा लगा कि मुझे भी
चिड़िया होना चाहिए था
क्योंकि चिड़िया आज़ाद है
और मैं भी चिड़िया जैसे
उड़ना चाहती हूँ।

सुहानी कुमारी, सातवीं, सेंट मेरी स्कूल, वैशाली, बिहार

मेरा पन्ना

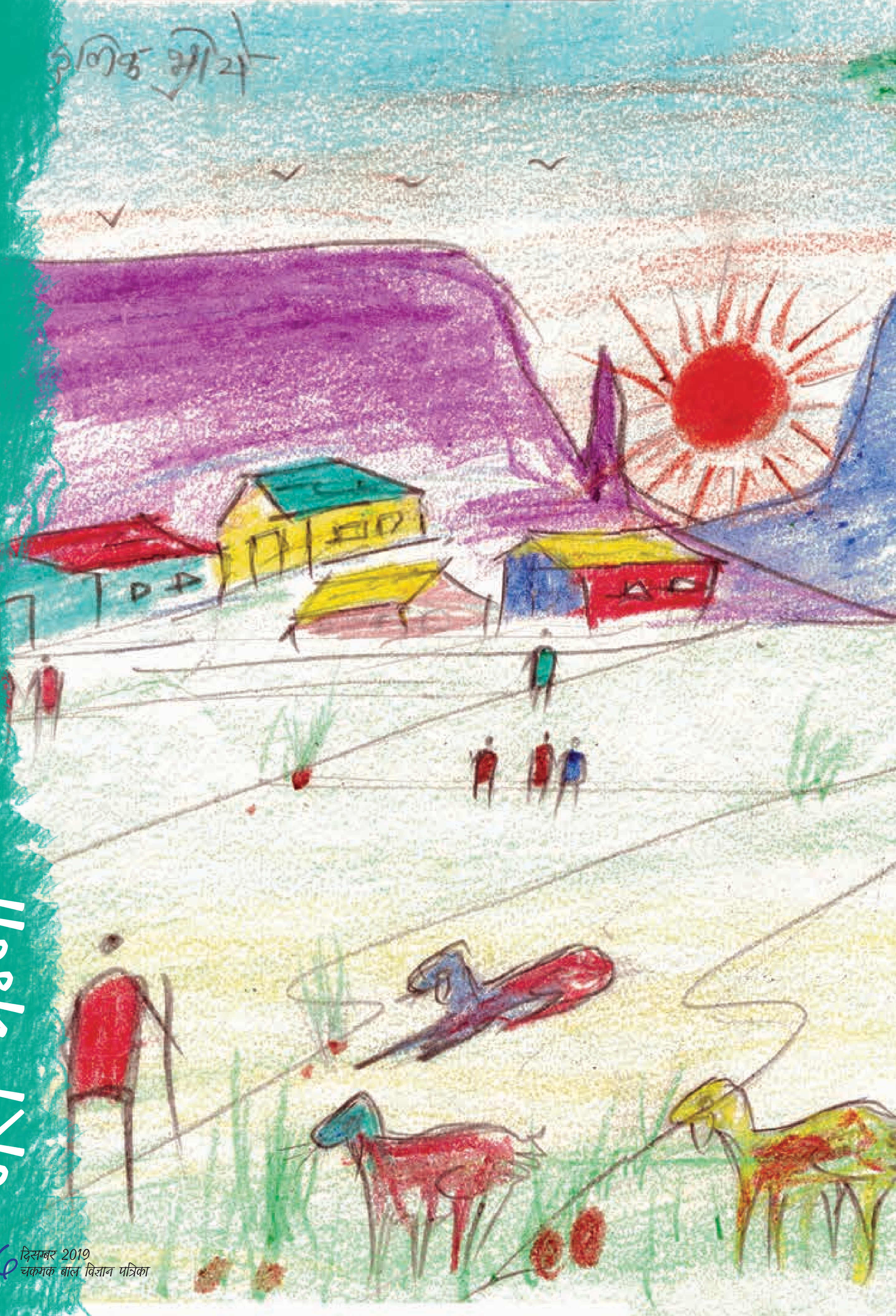

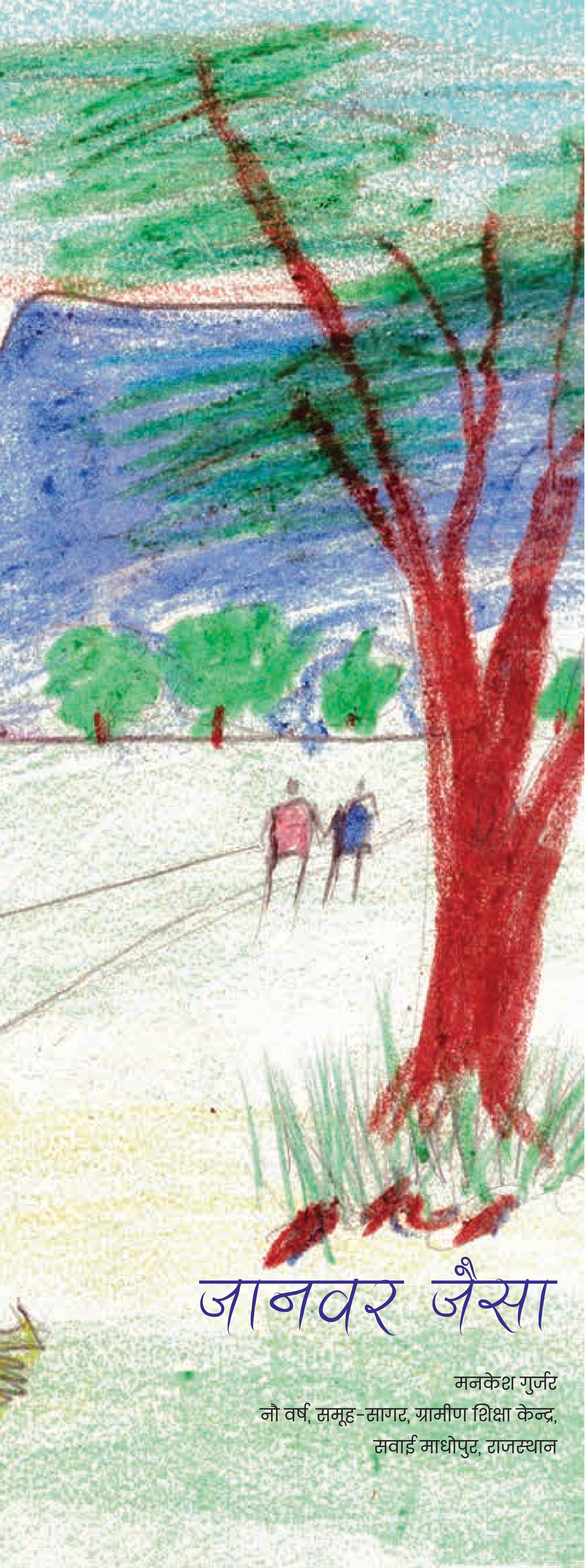

चित्र: सागर पुण्डलिक, आठवीं, शासकीय माध्यमिक आश्रमसाला, सिरगाँव, नासिक, महाराष्ट्र

जानवर जैसा

मनकेश गुर्जर
नौ वर्ष, समूह-सागर, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर, राजस्थान

एक बार एक पहाड़ पर बहुत ही सुन्दर पौधा उगा हुआ था। वहाँ से एक आदमी गुज़रा तो उसकी नज़र उस पौधे पर पड़ी। उसने सोचा कि यह पौधा कितना सुन्दर है। क्यों न, मैं इसे उखाड़कर ले जाऊँ और अपने घर पर लगा दूँ। गाँव वाले मेरे घर पर इस पौधे को देखेंगे तो बहुत खुश होंगे। यह पौधा जानवर की तरह लगता है। जैसे ही वह आदमी उस पौधे को उखाड़ने लगा तो वहाँ एक औरत आ गई।

औरत ने कहा, “तुम यह पौधा क्यों उखाड़ रहे हो?”

आदमी ने कहा, “तुम्हें, इससे क्या लेना-देना है।”

वे दोनों आपस में झगड़ने लगे। उनका झगड़ा बढ़ता ही गया। कुछ देर में इधर से औरत के गाँव वाले आ गए और उधर से आदमी के गाँव वाले आ गए। उन गाँव वालों ने मिलकर उन्हें झगड़ने से रोका और झगड़े का कारण जाना।

महिला ने बताया “यह व्यक्ति जंगल से इस पौधे को उखाड़कर ले जा रहा था, मैंने इसे रोकने की कोशिश की तो झगड़ने लगा।”

गाँव वालों ने जब उस पौधे को देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गए। वह बहुत ही सुन्दर पौधा था और एकदम जानवर जैसी आकृति का दिखाई दे रहा था। गाँव वालों ने मिलकर निर्णय किया कि यह पौधा जिस जगह पर उगा है वहीं रहेगा। कोई भी व्यक्ति इसे नहीं ले जा सकता, जो व्यक्ति इसे यहाँ से उखाड़कर ले जाएगा, उसे दण्ड दिया जाएगा। फिर वह आदमी कुछ नहीं बोला और वहाँ से चल दिया।

डरावना महल

प्रियांशु तिवारी
नवीं, ग्राम गोठी, परिवर्तन सेंटर
सिवान, बिहार

एक बगीचा था। उसके पीछे एक महल था। लोग कहते थे कि वह एक डरावना महल था। उसमें एक काली बिल्ली थी। लोग उसे चुड़ैल कहते थे। जो भी जाता था वह उसको मार देती थी। एक दिन बच्चे बगीचे में क्रिकेट खेल रहे थे। एक बच्चे का नाम आयुष था। उसने गेंद को इतनी तेज़-से मारा कि गेंद महल की तीसरी मंज़िल में चली गई। तो आयुष बोला कि चलो, गेंद लाने चलते हैं। तो सब बोले कि हम सब नहीं जाएँगे क्योंकि उसमें चुड़ैल रहती है। तो आयुष अकेले गेंद लेने चला गया। तो सब बच्चे बोले कि आयुष अकेला गया है। हम सब भी चलते हैं। सब बच्चे गेंद को ढूँढ रहे थे कि तभी काली बिल्ली आगे से आई। सभी बच्चे डर गए और भागने लगे। तभी एक बड़ी-सी परछाई आई। और फिर एक बुढ़िया आई। सभी बच्चों ने सोचा कि चुड़ैल आ गई। तभी बुढ़िया बोली, "बच्चो, डरो मत। मैं चुड़ैल नहीं हूँ। बस एक बार गाँव का एक आदमी आया और मेरी बिल्ली को देखकर डर के मारे भागने लगा। हड़बड़ी में उसने आगे नहीं देखा और शीशे से टकराकर गिर गया। तभी से लोग मुझे चुड़ैल कहने लगे।"

चित्र: विद्या कुमारी, छठवीं, एम.जी. हाई स्कूल
पटना, बिहार

चित्र: अनाम, अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

टीचर के साथ मस्ती

लक्ष्मी, तेरह वर्ष
व
गोपाल, ग्यारह वर्ष
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
सवाई माधोपुर, राजस्थान

शनिवार का दिन था। बहुत तेज़ बारिश हो रही थी। कक्षा में पढ़ाई चल रही थी। पर बारिश को देखकर सारे बच्चे बाहर आ गए और बारिश में नहाने लगे। सभी बच्चे पानी में मस्ती कर रहे थे। पानी में बच्चे कूद-कूदकर नहा रहे थे। बच्चों ने शिक्षकों की भी नहीं सुनी। स्कूल के पीछे के लटिया नाले में बहुत तेज़ पानी आ गया था। उसमें बहुत सारा कचरा भी बहकर आ रहा था। लटिया नाले का पानी सड़क पर आ गया। बहुत सारे लोगों की गाड़ियाँ उसमें नहीं चल पाईं। नालियाँ पानी से भरी हुई थीं। कुछ बच्चे पानी में नाव चलाने लगे। यहाँ तक तो ठीक था, पर सारे बच्चों ने टीचर को भी पानी में भिगो दिया। टीचर नहाना नहीं चाहती थीं। पर कोई उनसे डरता नहीं था। इसीलिए बच्चों ने उन्हें भी भिगो दिया।

बारिश बन्द हो गई तो सारे बच्चे और टीचर घर जाकर अपने कपड़े चेंज करके वापस स्कूल आए। घर जाने से पहले हम सबने मिलकर स्कूल की साफ-सफाई की। फिर सारे बच्चे पढ़ाई करने बैठ गए। उसके बाद सारे बच्चे पीछे जाकर देखते हैं कि कोई गाय या कुत्ता तो अन्दर घुसा हुआ नहीं है। उसके बाद सारे बच्चे घर निकल जाते हैं।

माथापच्ची

1. क्या तुम दो सीधी लाइनों से इस चाँद को छह भागों में बाँट सकते हो?

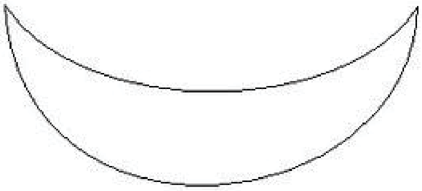

2. इस चित्र में एक तितली छिपी है। तुमने ढूँढ ली क्या?

3. गीत ने अर्शी से पूछा, "कितने बज रहे हैं?" अर्शी ने कहा, "सुई के ऊपर सुई है और जितने बजने वाले हैं, उतने बजने में उतने ही मिनट बाकी हैं।" गीत को पता चल गया कि कितने बजे हैं। क्या तुम्हें भी पता चल गया?

4. जसमीत ने अपने घर में एक कत्ल होते हुए देखा लेकिन उसने उस व्यक्ति को बचाने की कोई कोशिश नहीं की। क्यों?

5. एक व्यक्ति 500 रुपए कीमत की चीज़ें खरीदकर उन्हें 300 रुपए में बेचता था। कुछ ही महीनों बाद वह लखपति हो गया। यह कैसे हो सकता है?

6. क्या तुम्हें इस चित्र में कुछ गड़बड़ लग रही है?

फटाफट बताओ -

7. छूने में शीतल, सूरत है लुभानी
रात में मोती, दिन में पानी

(ओस)

8. पानी से पैदा होता है
पानी में मर जाता है
भोजन से तो इसका भैया
बड़ा ही गहरा नाता है

(नमक)

9. मारो तो डण्डा, खाओ तो मिठाई
हमने वह अपने, खेत में उगाई

(गन्ना)

10. सीधा करो तो पता चले,
उलटा करके ताप चढ़े।

(पता)

हरे-भरे छिलकों का केला,
इससे भरा हुआ है ठेला!
फलवाला चिल्लाता ले लो,
मीठा हलुआ-सा है देखो!
बीज न गुठली इसमें पाओ,
छिलका छीलो, गप से खाओ!

केला

सुधा चौहान

चित्र: नीलेश गेहलोत

माथापच्ची जवाब

1.

2.

भूलभुलैया का जवाब

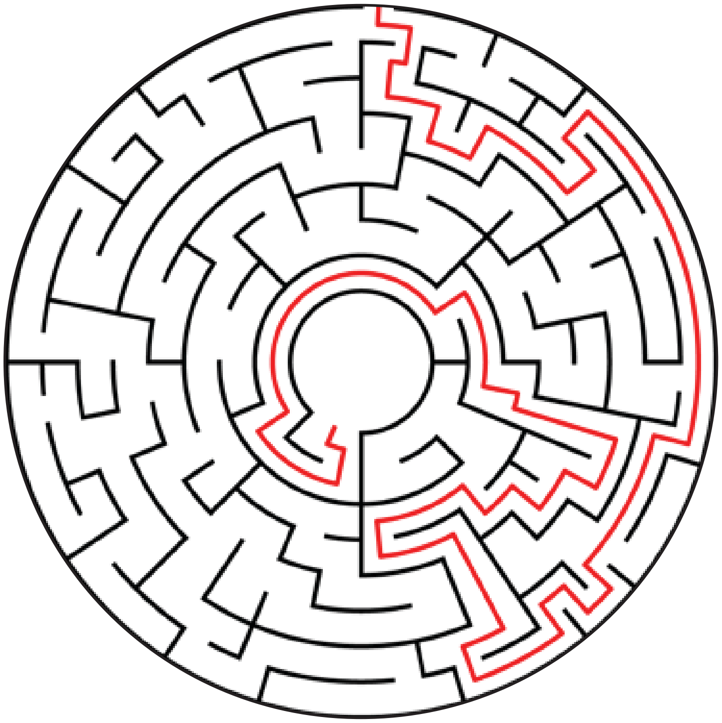

3. दस बजने में दस मिनट कम।

4. क्योंकि उसने वह कत्ल होते हुए टीवी में देखा था।

5. हो सकता है, क्योंकि वो आदमी पहले करोड़पति था।

6. किताब के कवर पर नाम उलटा लिखा है।

नवम्बर की चित्र पहेली का जवाब

सा1	बु	न2		कॉ3	पी4		गु5	च्छा
बू		म			पा6	प7	ड़	
दा		क8	पू	र9		नी		त10
ना 11	क12			ब13	टे	र		रा
	पा14	उ	ड15	र			का16	जू
बा17	ट		ब		द18	रा	ज	
ल		गु19	ल	द	स्ता		ल	
टी20	म21		रो		ने			पि22
	क्खी		टी23	वी		मं24	ज	न

सुडोकू-25 का जवाब

1	5	4	8	6	7	3	2	9
8	2	3	1	4	9	5	7	6
6	9	7	2	3	5	8	4	1
5	4	9	6	8	2	1	3	7
7	8	1	4	5	3	9	6	2
3	6	2	9	7	1	4	5	8
9	1	5	3	2	6	7	8	4
2	7	8	5	1	4	6	9	3
4	3	6	7	9	8	2	1	5

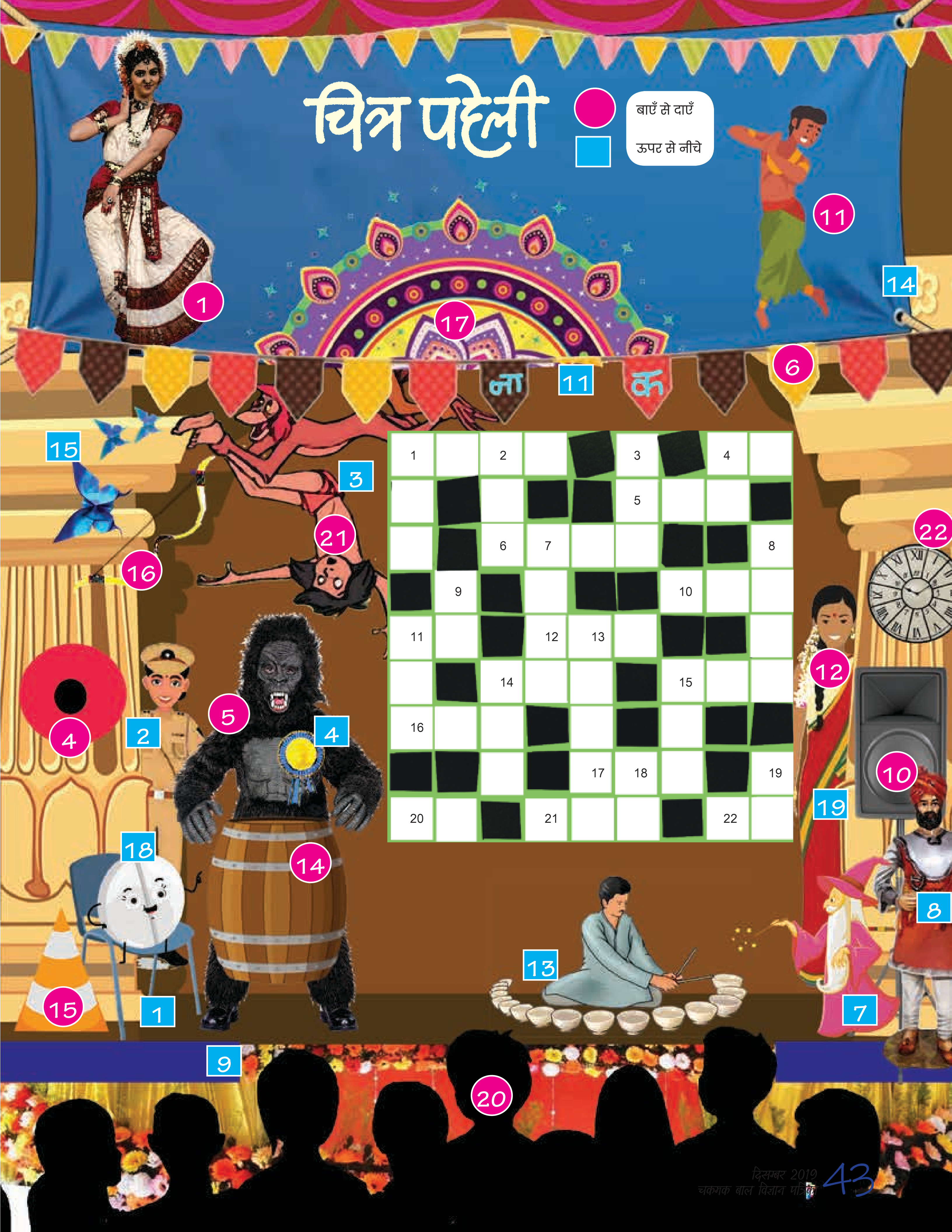

1		2		■	3	■	4	
	■		■	■	5			■
	■	6	7			■	■	8
■	9	■		■	■	10		
11		■	12	13		■	■	
	■	14			■	15		
16			■		■		■	■
■	■		■	17	18		■	19
20		■	21			■	22	

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

जुनू और उनु

निधि
चित्र: तापोशी घोषाल

पता है! जुनू और उनु पहले दोस्त नहीं थे। शुरू-शुरू में उनके घर दोस्त थे, जो आमने -सामने रहने लगे थे। फिर घरों के छज्जे दोस्त बने। छज्जों में अलगनियाँ बँधी तो उनकी भी दोस्ती हो गई। अलगनियों पर कपड़े सूखते तो वो भी आपस में बतियाते। लेकिन जुनू और उनु अब भी दोस्त नहीं थे। जुनू की अलगनी पर जुनू की कमीज़ थी, बेल-बूटेदार कमीज़। उनु की अलगनी पर उनु की कमीज़ थी। बटन की जगह लकड़ी के तोते सजे थे उसमें। लेकिन लकड़ी के तोतों को ये नहीं पता था कि वो लकड़ी के हैं। ठीके वैसे ही, जैसे बेल-बूटों को नहीं पता था कि वो बस कढ़ी हैं। वो तो कभी भी बढ़कर फूल उगाने को तैयार थीं। एक रोज़ उनु का रुमाल कमीज़ में छूट गया। रुमाल पर बाघ बना था। हवा चली, कमीज़ उड़ी तो बाघ की नींद भी उड़ गई। बाघ दहाड़ा। तोते लकड़ी के थे, तो भी तोते ही तो थे। डर गए, डरकर उड़ गए। लकड़ी के तोतों ने रंगों की बेलों की तरफ देखा। बेलों ने तोतों की तरफ देखा। कुछ तो बात हुई होगी। तोते उड़ कर बेलों पर फुदकने लगे, कुछ जेबों में जा छिपे। जेबों वाली बेलें पाकर तोते बड़े खुश थे। तोतों के आने से बेलों पर बहार आ गई। फूल खिल गए। फूलों की खुशबू उनु-जुनू तक पहुँची। जुनू और उनु दोस्त बन गए।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन